Nālandā
UNIVERSITY

वार्षिक रिपोर्ट

नालंदा विश्वविद्यालय

2012-2013

प्राक्कथन

वर्ष 2012–13 विश्वविद्यालय के लिए एक महत्वपूर्ण एवं व्यस्ततम वर्ष रहा। अपनी प्रगति को व्यापक एवं सुगम तरीके से लिपिबद्ध करते हुए हमने इस रिर्पोट में विभिन्न गतिविधियों को चार प्रमुख भागों; अभिशासन, अकादमिक गतिविधि, परिसर एवं वित्त में बांटा है।

विश्वविद्यालय ने इन सभी क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति देखी है।

अभिशासन की दिशा में हुई विशिष्ट उपलब्धियों में भारत सरकार के द्वारा नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 में संशोधन सुझाने हेतु बनायी गयी समिति एवं इसके आधारभूत सुविधाओं के विकास में सहायता प्रदान करने हेतु राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति का गठन प्रमुख है। इसी वर्ष कई गणमान्य व्यक्तियों ने भी विश्वविद्यालय का भ्रमण किया था। इन अतिथियों में जाने माने अमेरिकी अर्थशास्त्री एवं नोबेल पुरस्कार प्राप्त प्रोफेसर जोसेफ स्टिगलिज हैं, जो सम्प्रति कोलम्बिया विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं। मोनटेक सिंह अहलूवालिया उपाध्यक्ष योजना आयोग, जो राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति की बैठक में भाग लेने आये थे। विदेश मंत्री सलमान खुर्शीद, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ विश्वविद्यालय के कार्यों को देखने आए थे।

इसी वर्ष विभिन्न देशों से वृत्ति दान मिले या उसकी घोषणा की गयी जिसमें पर्यावरण अध्ययन में पीठ के निर्माण हेतु आस्ट्रेलियन अनुदान, लाओस सरकार के द्वारा 50000 डॉलर का अनुदान एवं सिंगापुर के द्वारा 5 से 10 मीलियन डॉलर का अंशदान प्रमुख है।

अकादमिक क्षेत्र में भी कई नई गतिविधियां शुरू हुई जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय के बौद्धिक मत से जनसामान्य को परिचित कराना था। विश्वविद्यालय के पहले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' सिविलाइजेशनल डॉयलॉग एण्ड द आशियान' का जुलाई 2012 में आयोजन हुआ एवं अत्यन्त अल्पकाल में ही सम्मेलन की कार्यवाही पुस्तक के रूप में दिसंबर 2012 में प्रकाशित हुई। इसी वर्ष प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला की शुरूआत हुई जो आम लोगों के बीच विचारों के आदान–प्रदान करने का मंच बना। नालंदा फेलोशिप प्रोग्राम की विधिवत शुरूआत भी जनवरी 2013 में हुई।

दो स्कूलों (पाठ्यक्रमों) पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन केन्द्र (एस. ई. ई. एस.) तथा इतिहास अध्ययन केन्द्र (एस. एच. एस.) से जुड़ी योजनाएं कई सहयोग करार के साथ आगे बढ़ी। इन सहयोगी संस्थाओं में प्रमुख हैं– भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, कोरियन अध्ययन अकादमी, क्याटो विश्वविद्यालय, येल विश्वविद्यालय, नालंदा श्री विजया केन्द्र, इलिनॉय विश्वविद्यालय, अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन केन्द्र लेडेन, एवं ई. एफ. ई. ओ. (फ्रांस) प्रमुख है।

परिसर के संदर्भ में उसके निर्माण का कार्य पेशेवर सलाहकार की नियुक्ति के साथ शुरू हुआ जिन्होंने संचालन समिति के साथ मिलकर वास्तु कला संरचना प्रतियोगिता का संचालन किया। इस प्रतियोगिता हेतु कुल आठ आवेदनों को चयनित किया गया और इन्हें 25 अप्रैल 2013 तक अपनी प्रविष्टियां जमा करने की अनुमति दी गई। विश्वविद्यालय के निर्माण स्थल पर मृदा, जल, स्थलाकृति एवं पुरातात्विक महत्व के वस्तुओं की जानकारी संग्रहित करने के उद्देश्य से कई प्रकार के सर्वेक्षण किए गए ताकि निर्माण स्थल की पृष्ठभूमि की जानकारी को मास्टर प्लान बनाने के लिए होने वाली प्रतियोगिता के लिए उपलब्ध कराया जा सके।

विश्वविद्यालय को राजगीर में स्वास्थ्य विभाग बिहार सरकार का 4.5 एकड़ का परिसर सम्पूर्ण रूप से प्राप्त हुआ। इसके मुख्य भवन में विश्वविद्यालय का वर्तमान अस्थायी कार्यालय है और विश्वविद्यालय इस भवन को ही मरम्मत कर और पुर्नरूद्धार अंतरिम परिसर के रूप में उपयोग करने के लिए तैयार करेगी।

हमें उम्मीद है कि यह रिर्पोट आपको उपयोगी लगेगी। इसके अतिरिक्त आप अपनी रूचि के विषयों की विस्तृत जानकारी के लिए भी हमसे सम्पर्क कर सकते हैं।

विषय–सूची

प्राक्कथन **i**

अभिशासन **1**

नालंदा परामर्शदाता समूह द्वारा प्रबन्धन मंडल के दायित्वों का निर्वहन 1

अमर्त्य सेन का कुलाधिपति के पद पर नियुक्ति 2

प्रबंधन मंडल के सदस्यगण 3

नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की बैठकें 7

नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 में संशोधन हेतु समिति का गठन 8

आधारभूत संरचना के विकास में सहयोग करने हेतु राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति का गठन 11

विश्वविद्यालय के लिए निधि अर्जित करने हेतु वृत्तिदान समिति का गठन 15

नालंदा विश्वविद्यालय को मिले वृत्तिदान प्रस्ताव 16

विदेश मंत्रालय के लिए गठित सलाहकार समिति का नालंदा विश्वविद्यालय परिसर भ्रमण 18

इलिनॉस विश्वविद्यालय अरबना केम्पेन (यू. एस. ए.) के प्राध्यापकों का विश्वविद्यालय भ्रमण 19

जोसेफ. ई. स्टिगलिज का नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण 19

सिंगापुर के विदेश मंत्री से कुलपति की भेंट 19

अकादमिक गतिविधि **20**

दो स्कूलों (पाठ्यक्रमों) का स्वरूप ग्रहण 21

नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा दक्षिण बिहार का अनुसंधान एवं अध्ययन 23

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ हुए सहयोग समझौते 25

नालंदा फेलोशिप प्रोग्राम का प्रारंभ 30

प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला का प्रारंभ 31

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय को प्राप्त प्रथम वैयक्तिक संग्रह 33

नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का पटना में आयोजन 33

आशियान–भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के अवसर पर नालंदा विश्वविद्यालय के प्रथम प्रकाशन का विमोचन 34

मेकांग–गंगा क्षेत्र के लिए उभय पुरालेखीय संसाधन केन्द्र की स्थापना 35

अमर्त्य सेन के साथ सार्वजनिक विचार मंथन 'नालंदा : द वे अहेड' का आयोजन 35

फिलिप जी. अटवैक के साथ 'इनविजनिंग नालंदा' विमर्श का आयोजन 36

बाह्य सम्मेलन 36

परिसर **38**

ई. डी. सी. आई. एल. के द्वारा विश्वविद्यालय का विस्तृत परियोजना रिर्पोट पेश 38

विश्वविद्यालय में नए पदनाम और पद–स्थान की सृष्टि 39

दिल्ली कार्यालय का नए भवन में स्थानान्तरण 40

बिहार सरकार के द्वारा अंतरिम परिसर हेतु स्थान का प्रबन्ध 41

स्थायी परिसर की संरचना और निर्माण कार्यों में अग्रतर प्रगति 43

चहारदीवारी का निर्माण का कार्य 51

वित्त **52**

अभिशासन

नालंदा परामर्शदाता समूह द्वारा प्रबन्धन मंडल के दायित्वों का निर्वहन

नालंदा परामर्श दाता समूह **नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम** 2010 के प्रावधानों के अनुरूप नालंदा प्रबंधन मंडल की शक्तियों एवं कार्यों का निष्पादन करती आ रही है।

अधिनियम की धारा जो प्रबंधन मंडल की शक्तियों एवं कार्यों से संबंधित है, के अनुसार :

8. (1) प्रबंधन मंडल विश्वविद्यालय के सभी नीतियों एवं निर्देशों के लिए उत्तरदायी होगी एवं उसके कार्यों का प्रबन्धन करेगी।

(2) प्रबंधन मंडल उन सभी शक्तियों का प्रयोग करेगी जो विधि में विहित है। नालंदा परामर्श दाता समूह प्रबन्धन मंडल की तरह उन शक्तियों एवं कार्यों का निष्पादन एक वर्ष तक के लिए करेगी या उस समय तक जब तक की सदस्यगण निर्दिष्ट धारा 7 की उपधारा 1 के खंड (सी) से (जी) के अनुसार नामित किये गये हैं या जो भी पहले हो।

इस उपधारा के आलोक में भारत सरकार के द्वारा नालंदा परामर्श समूह से यह आग्रह किया गया है कि वह प्रबंधन मंडल के दायित्वों का निर्वहन करती रहे जब तक की अधिनियम के प्रावधानों के अनुरूप प्रबंधन मंडल का पुर्नगठन नहीं हो जाता।

प्रबंधन मंडल के कार्यकाल का विस्तार भारत सरकार के द्वारा राजपत्र में प्रकाशित अधिसूचना के मार्फत नवम्बर 2011 एवं पुनः नवम्बर 2012 में किया गया। इसी प्रक्रिया के द्वारा भारत सरकार नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम के कुछ प्रावधानों का संशोधन जो विशेषतः प्रबन्धन मंडल के गठन से संबद्ध है, कर सकी।

अमर्त्य सेन का कुलाधिपति के पद पर नियुक्ति

अक्टूबर 2011 में बीजिंग में हुई बैठक में प्रबंधन मंडल ने विश्वविद्यालय के विधान के अनुरूप कुलाधिपति पद पर नियुक्ति के लिए तीन व्यक्तियों के नाम के पैनल की अनुशंसा की थी। ये नाम विदेश मंत्रालय के माध्यम से माननीय कुलाध्यक्ष (विजिटर) को भेजे गए। कुलाध्यक्ष महोदय ने प्रोफेसर अमर्त्य सेन को 18 जुलाई 2012 से कुलाधिपति के पद पर नियुक्त किया।

प्रोफेसर अमर्त्य सेन को बधाई देते नालंदा प्रबंधन मंडल के सदस्यगण।

प्रबंधन मंडल के सदस्यगण

प्रोफेसर अमर्त्य सेन नालंदा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं प्रबंधन मंडल के अध्यक्ष हैं। प्रोफेसर सेन हार्वड विश्वविद्यालय में लामोंट विश्वविद्यालय प्रोफेसर एवं अर्थशास्त्र व दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर हैं। इससे पहले वे ट्रिनिटी महाविद्यालय कैम्ब्रिज के मास्टर (अधीक्षक) थे। उनके वृहत् शोध में अर्थशास्त्र, दर्शन शास्त्र और निर्णय सिद्धांत, सामाजिक पसंद सिद्धांत, कल्याणकारी अर्थशास्त्र, माप का सिद्धांत, विकास अर्थशास्त्र, जन स्वास्थ्य, लैंगिक अध्ययन, नैतिक एवं राजनैतिक दर्शन और शांति एवं युद्ध का अर्थशास्त्र आदि प्रमुख है। उन्हें भारत रत्न (भारत के राष्ट्रपति के द्वारा दिये जाने वाले सर्वोच्च सम्मान) और नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

जार्ज यो नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की अन्तर्राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष हैं। वे विश्व आर्थिक मंच के संस्थापक मंडल, बेरग्रुएन संस्थान के 21वीं शताब्दी परिषद, हार्वड विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय सलाहकार मंडल एवं आई. ई. एस. ई. बिजनेस स्कूल के भी सदस्य हैं। इससे पहले वे करीब 23 वर्षों तक सिंगापुर सरकार के विभिन्न मंत्री पदों जैसे सूचना एवं कला, स्वास्थ्य, व्यापार एवं उद्योग एवं विदेश मंत्री के पद पर रहे।

एन. के. सिंह बिहार से राज्य सभा के सदस्य हैं। वे एक नौकरशाह थे जिन्होंने भारत सरकार के कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। वे भारत सरकार के व्यय एवं राजस्व सचिव रहे। वे प्रधानमंत्री के सचिव एवं योजना आयोग के सदस्य तथा बिहार राज्य योजना पर्षद के उपाध्यक्ष भी रहे। इन्होंने कई किताबें और लेख प्रकाशित की है। जिसमें सुधारवादी राजनैतिक अर्थव्यवस्था का गहन विश्लेषण और गठबंधन की राजनीति की वास्तविकता का उल्लेख है।

मेघनाद देसाइ लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स के सेंटर फॉर द स्टडी ऑफ ग्लोबल गवर्नेंस, जिसकी स्थापना उन्होंने 1992 में की थी के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर हैं। 1991 में उन्हें वेस्टमिंस्टर शहर के सेंट क्लेमेंट डेन्स की ओर से बैरन देसाई के सम्मान से नवाजा गया। वे 1990 में लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स में स्थापित डेवेलपमेन्ट स्टडीज इन्स्टीट्यूट (डेस्टिन) के संस्थापक सदस्य हैं। उन्होंने अर्थमिति, समष्टि अर्थशास्त्र, मार्क्स शास्त्रीय अर्थशास्त्र एवं विकास अर्थशास्त्र जैसे विषयों में अध्यापन कार्य किया है।

प्रोफेसर प्रपोद अस्सावाविरूलहाकर्ण चुलालॉन्गर्कोन विश्वविद्यालय, बैंकॉक में कला संकाय के अध्यक्ष हैं। वे चुलालॉन्गर्कोन विश्वविद्यालय के पूर्वी भाषाओं के विभाग के अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने कैलिर्फोनिया विश्वविद्यालय बर्कले से बौद्ध शिक्षा में अपना डाक्टरेट प्राप्त किया है। उनकी रूचि के शोध विषय हैं : निरूक्ति, भाषा और समाज, पालि–संस्कृत साहित्य और धर्मग्रन्थों का अध्ययन।

प्रोफेसर वांग गुंग वू दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान सिंगापुर के अध्यक्ष एवं नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर (एन. यू. एस.) के प्रोफेसर हैं। वे आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के मानद प्रोफेसर, ली क्वान यू स्कूल ऑफ पब्लिक पॉलिसी के अध्यक्ष, चायनीज हेरिटेज सेन्टर के उपाध्यक्ष, इन्स्टीट्यूट ऑफ स्ट्रेटिजिक एण्ड डिफेन्स स्टडीज के बोर्ड के सदस्य भी हैं। प्रोफेसर वांग कमांडर ऑफ ब्रिटिश इम्पायर भी हैं। वे वर्ष 1986 से 1995 तक हांग कांग विश्वविद्यालय के कुलपति रहे थे।

प्रोफेसर सुसुमू नाकानीशी नाडा प्रीफेक्चर काम्प्लेक्स के निदेशक और अन्तर्राष्ट्रीय जेपैनिज अध्ययन शोध संस्थान के मानद प्रोफेसर हैं। इनकी शोध रूचि के विषयों में जापानी संस्कृति पर प्रकाशित साहित्यिक समीक्षा का अध्ययन, प्राचीन साहित्य के तुलनात्मक शोध जैसे मान्यो शू के काव्य संग्रह की समीक्षा आदि विषय है। वे शिन्तोवाद, कोजिकी, निहॉन शॉकी एवं अन्य शास्त्रीय जापानी साहित्यों के आदरणीय विद्वान हैं। उन्होंने प्राचीन जापानी साहित्य पर कई पुस्तकें भी लिखी हैं।

प्रोफेसर सुगाता बोस हार्वड विश्वविद्यालय इतिहास विभाग के गार्डिनर प्रोफेसर हैं। वे औपनिवैशिक और उत्तर औपनिवैशिक राजनीतिक अर्थव्यवस्था, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के अर्न्तसम्बन्ध, हिन्द महासागर के इस पार यात्रा, व्यापार और कल्पना की अन्तर क्षेत्रीय स्थिति, एवं भारतीय नैतिक विमर्श, राजनैतिक दर्शन एवं आर्थिक विचार के विद्वान हैं। उन्होंने टैगोर के प्रकाशित गीतों का अंग्रेजी अनुवाद किया है। उन्हें वर्ष 1997 में गुग्गनहेइम फेलोशिप का पुरस्कार मिला था।

प्रोफेसर वांग वेंगवेइ पीकिंग विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट ऑफ ओरियेन्टल स्टडीज एवं ओरियेन्टल लिटरेचर रिसर्च सेन्टर के प्रोफेसर एवं निदेशक हैं। वे पीकिंग विश्वविद्यालय में इंडिया रिसर्च सेन्टर के निदेशक भी हैं। उन्होंने चीनी बौद्ध तीर्थयात्राओं के इतिहास और चीनी भिक्षुओं ह्वेन त्सांग और यित्सिंग की यात्राओं के विवरण एवं चीन और भारत के सांस्कृतिक इतिहास के विनिमय पर महत्वपूर्ण कार्य किया है और इस विषय पर उनके कई शोध पत्र प्रकाशित हुए हैं।

डॉ. तानसेन सेन न्यूयार्क सिटी विश्वविद्यालय के बरूच महाविद्यालय में एशियाई इतिहास और धर्म के एसोसिएट प्रोफेसर हैं। वे दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान के नालंदा– श्रीविजया केन्द्र में वरीय अतिथि शोधकर्ता हैं। वे चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी के दौरान एशिया में अंतर सांस्कृतिक व्यापार से संबंधित विनिबंध पर कार्य कर रहे हैं। वे दक्षिणी सिल्क मार्ग पर आधारित सहयोगी परियोजना में और भारत में चीनी समुदाय के इतिहास और अनुभवों के संग्रहण के लिए एक वेबसाइट के निर्माण पर कार्य कर रहे हैं।

संजय सिंह भारत सरकार के विदेश मंत्रालय में सचिव (पूर्व) हैं। वे वर्ष 1976 में भारतीय विदेश सेवा में शामिल हुए। उन्होंने कई देशों में अवस्थित भारतीय मिशनों एवं विदेश मंत्रालय नई दिल्ली में भारतीय विदेश मंत्री के कार्यालय के निदेशक एवं लैटिन अमेरिकी देशों से संबंधित प्रभाग के संयुक्त सचिव एवं प्रमुख के रूप में कार्य किया है। वे स्थापना में भी रहे। वे वर्ष 2009 से 2011 तक ईरान में भारत के राजदूत थे।

डॉ. गोपा सभरवाल नालंदा विश्वविद्यालय की कुलपति हैं। वह भारत के अग्रणी कला महाविद्यालय, लेडी श्रीराम कॉलेज से नालंदा आईं जहां उन्होंने 1993 में समाजशास्त्र विभाग की स्थापना की थी। पिछले दो दशकों में यह विभाग असाधारण क्षेत्र कार्य एवं कई देशों जैसे आस्ट्रेलिया, अमेरिका, सिंगापुर और जापान के छात्रों के साथ नियमित छात्र विनिमय के कारण देश के सर्वश्रेष्ठ विभागों में रूपान्तरित हो चुका है। उनके व्यापक शोध में बाहरी भारत में जातीय समूह, दृश्य नृविज्ञान और समाज के इतिहास पर जोर दिया गया है। उन्होंने बेलगाम, कर्नाटक में नृजातीय समूह और नृजातीयता विषय पर शोध कर दिल्ली विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में डाक्टरेट की उपाधि हासिल की है।

नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की बैठकें

वर्ष 2012–13 के दौरान प्रबंधन मंडल की दो बैठकें पटना में हुई। पहली बैठक 19, 20 जुलाई 2012 को हुई थी और दूसरी बैठक 4 फरवरी 2013 को हुई थी। यह प्रबंधन मंडल की क्रमशः चौथी एवं पांचवी बैठक थी।

इन बैठकों में प्रबंधन मंडल ने कई विषयों जैसे विश्वविद्यालय की स्थापना, विकास कार्यों की समीक्षा एवं कई प्रस्तावों को स्वीकृति दी एवं विश्वविद्यालय के सामान्य कार्यों को सुसाध्य बनाया।

1. पहली बैठक :– 21–22 फरवरी 2011, नई दिल्ली
2. दूसरी बैठक :– 6–7 जुलाई 2011, पटना
3. तीसरी बैठक :– 14–15 अक्टूबर 2011, बीजिंग चीन
4. चौथी बैठक :– 19–20 जुलाई 2012, पटना
5. पांचवी बैठक :– 4 फरवरी 2013, पटना

फरवरी 2013 को पटना में आयोजित प्रबंधन मंडल की पांचवी बैठक।

नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 में संशोधन हेतु समिति का गठन

नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 के पारित होने के पश्चात् ही यह स्पष्ट हो गया था कि अधिनियम के कुछ निश्चित प्रावधानों में बदलाव की जरूरत है। इसके अलावा विश्वविद्यालय प्रशासन से जुड़े कुछ सामान्य धाराएं भी अधिनियम में सम्मिलित होने से रह गयी थी। नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की व्यापक समीक्षा करने एवं तदनुसार संशोधन सुझाने के उद्देश्य से भारत सरकार के द्वारा एन. आर. माधव मेनन की अध्यक्षता में अप्रैल 2012 एक समिति बनायी गयी।

इस समिति की 2012 में चार बैठकें हुई, जिसमें तीन बैठकें नई दिल्ली में क्रमशः 16 मई, 16 जून एवं 6 सितम्बर 2012 को हुई। और आखिरी बैठक 7 अक्टूबर 2012 को पटना में हुई थी।

समिति के समक्ष विचारणीय विषयों में शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वायत्तता से संबंधित प्रावधानों का परीक्षण करना था।

इसके लिए समिति ने :–

1. उन संशोधनों पर विचार किया जिससे विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की उत्कृष्टता को हासिल कर सके। इसके लिए समिति व्यापक प्रतिनिधित्व एवं लचीले अभिशासन एवं अग्रगामी विधान के पक्ष में थी।

2. समिति सभी संविधियों, अध्यादेशों एवं नियमनों का परीक्षण कर ऐसे संशोधनों को सुझाने का पक्षधर थी जो अधिनियम से सामंजस्य रखता हो।

यह समिति अपने इस विचार में पूर्णतयाः स्पष्ट थी कि इस संस्थान को देश के अन्य संस्थानों की तुलना में विशिष्ट रूप से विकसित होने की छूट होनी चाहिए। इसके अलावा नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम एक ऐसा मॉडल पेश करे ताकि देश के अन्य विश्वविद्यालय के अधिनियमों में इसका अनुसरण हो। विश्वविद्यालय को शैक्षणिक, प्रशासनिक और आर्थिक स्वायत्तता हो, समिति ने यह बात पूरी स्पष्टता से कही।

समिति ने अपनी रिपोर्ट अक्टूबर 2012 को प्रस्तुत किया।

संशोधन समिति के सदस्यों ने विश्वविद्यालय के निर्माण स्थल का मुआयना किया।

नालंदा विश्वविद्यालय और विदेश मंत्रालय ने संयुक्त रूप से समिति के सुझावों के अनुरूप विश्वविद्यालय संशोधन बिल का मसौदा तैयार किया। संशोधन बिल को फरवरी 2013 में हुई प्रबंधन मंडल की पांचवी बैठक में प्रस्तुत किया गया। प्रबंधन मंडल के द्वारा कुछ बिन्दुओं पर टिप्पणी की गयी जो विशेषतः प्रबंधन मंडल के गठन एवं उसमें विभिन्न वर्गों के सदस्यों की भागीदारी को लेकर थी। सम्प्रति यह बिल, संसद में प्रस्तुत होने से पहले भारत सरकार के विभिन्न विभागों के बीच सलाह–मशविरे की प्रक्रिया में है।

यह समिति योजना आयोग के निर्देश के आलोक में 23 अप्रैल 2012 को गठित की गयी थी जिसे नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 के सफल कार्यान्वयन के हेतु संशोधन सुझाना था। इस समिति में निम्नांकित सदस्यगण थे।

1. **प्रोफेसर एन. आर. माधव मेनन**, पूर्व कुलपति, पश्चिम बंगाल राष्ट्रीय न्यायिक विज्ञान विश्वविद्यालय, कोलकाता **(अध्यक्ष)**
2. **प्रोफेसर पंकज चन्द्र,** निदेशक, भारतीय प्रबंधन संस्थान बैंगलोर **(सदस्य)**
3. **डॉ. गोपा सभरवाल,** कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय **(सदस्य)**
4. **प्रोफेसर जी. मोहन गोपाल,** निदेशक, राजीव गांधी समकालीन अध्ययन संस्थान नई दिल्ली **(सदस्य)**
5. **प्रोफेसर के. राजीव सक्सेना, उपाध्यक्ष**, दक्षिण एशिया विश्वविद्यालय **(सदस्य)**
6. **डॉ. मीनाक्षी गोपीनाथ,** प्रिंसिपल, लेडी श्री राम कॉलेज, नई दिल्ली **(सदस्य)**
7. **डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्रा**, संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय भारत सरकार **(सदस्य)**
8. विधायी मामले विभाग के प्रतिनिधि **(विशेष आमंत्रित सदस्य)**
9. व्यय विभाग के प्रतिनिधि **(विशेष आमंत्रित सदस्य)**
10. सलाहकार (उच्च शिक्षा) योजना आयोग **(सदस्य सचिव)**

आधारभूत संरचना के विकास में सहयोग करने हेतु राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति का गठन

भारत सरकार के द्वारा 23 अप्रैल 2012 को एक राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति का गठन किया गया था जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना के विकास विशेषकर सड़क एवं वायु मार्ग से उसे जोड़ने की सुविधा एवं धन की ससमय एवं पर्याप्त व्यवस्था में सहयोग देना था।

उपाध्यक्ष, योजना आयोग की अध्यक्षता में बनी इसी समिति के अन्य गणमान्य सदस्यों में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार, सदस्य, (मानव संसाधन विकास) एवं सदस्य (अन्तर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र) योजना आयोग और विदेश सचिव शामिल है।

श्री मोनटेक सिंह अहलूवालिया, उपाध्यक्ष, योजना आयोग एवं नालंदा अनुश्रवण समिति के अन्य सदस्य प्राचीन नालंदा के खंडहर का अवलोकन करते हुए।

रात्रि भोजन के समय प्रबंधन मंडल एवं अनुश्रवण समिति के सदस्य आपस में गुफ्तगु करते हुए।

इस समिति की पहली बैठक 27 जून 2012 को नई दिल्ली में हुई। समिति के सदस्यों के अतिरिक्त इस बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री अपने मुख्य सचिव, प्रधान सचिव (मानव संसाधन विकास) और राज्य सरकार के कुछ अन्य पदाधिकारियों के साथ शामिल हुए।

इस बैठक में समिति ने न केवल विश्वविद्यालय के विकास की योजनाओं और उसकी स्थापना की भविष्य की रूपरेखा पर विचार–विमर्श किया बल्कि उसके चारों तरफ के क्षेत्रों के विकास पर भी पर्याप्त ध्यान दिया। इन योजनाओं में बेहतर सड़क संपर्क एवं विश्वविद्यालय के समीप एक अन्तर्राष्ट्रीय विमानपत्तन की संभावनाओं पर विचार करना भी शामिल है। समिति ने इस विषय पर भी विचार–विमर्श किया कि स्थानीय लोगों को किस प्रकार इस परियोजना से जोड़ा जाय जिससे उन्हें इसका लाभ मिल सके।

राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति ने एडसिल इंडिया द्वारा तैयार बृहत् परियोजना रिपोर्ट पर विचार–विमर्श किया और सुझाव दिया कि प्रबंधन मंडल के द्वारा इस रिपोर्ट का मूल्यांकन एवं अनुमोदन होना चाहिए। उसके बाद विदेश मंत्रालय, वित्त मंत्रालय के अधीन वित्त व्यय समिति (ई. एफ. सी.) से इसकी स्वीकृति लेनी है।

भारत सरकार के द्वारा आवश्यक निधि की सुलभता वित्त व्यय समिति से स्वीकृति मिलने के बाद ही किये जाने का प्रावधान है।

प्रबंधन मंडल ने जुलाई 2012 की अपनी अगली बैठक में एडसिल के रिपोर्ट पर विचार किया एवं उसे स्वीकृति प्रदान कर दी।

नालंदा अनुश्रवण समिति की अगली बैठक दिनांक 5 फरवरी 2013 को राजगीर में हुई जिसमें समिति के अध्यक्ष एवं अन्य सदस्यों ने भाग लिया। इस बैठक में बिहार के मुख्यमंत्री, भारत सरकार के संबंधित मंत्रालयों एवं बिहार सरकार के संबंधित विभागों के वरीय पदाधिकारी गण शामिल हुए थे। समिति ने नालंदा विश्वविद्यालय के विकास में हुई प्रगति की समीक्षा की एवं इसके लिए कुछ अति महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

जून 2012 को हुई राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति की बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूची

प्रतिभागियों की सूची

1. **डॉ. मोनटेक सिंह अहलूवालिया**, उपाध्यक्ष, योजना आयोग
2. **डॉ. नरेन्द्र जाधव,** सदस्य (मानव संसाधन विकास) योजना आयोग
3. **श्री शिवशंकर मेनन,** राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार
4. **श्री एन. के. सिंह,** सांसद (राज्य सभा) सदस्य नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल
5. **श्री रंजन मथाई,** विदेश सचिव, विदेश मंत्रालय
6. **श्री नवीन कुमार,** मुख्य सचिव, बिहार सरकार
7. **श्री सुमित बोस,** सचिव (व्यय), वित्त मंत्रालय
8. **श्री संजय सिंह,** सचिव (पूर्व), विदेश मंत्रालय
9. **श्री आर. पी. सिसोदिया,** संयुक्त सचिव (उच्च शिक्षा)
10. **डॉ. गोपा सभरवाल,** कुलपति, नालंदा विश्वविद्यालय
11. **अरोमर रेवी,** निदेशक, आई. आई. एच. एस., बंगलौर
12. **पवन अग्रवाल,** (सलाहकार उच्च शिक्षा)

विशेष आमंत्रित सदस्य

1. **श्री नीतीश कुमार,** मुख्यमंत्री, बिहार
2. **प्रोफेसर सुशांत दत्तागुप्ता,** कुलपति, विश्व भारती शांति निकेतन
3. **श्री अमरजीत सिन्हा,** प्रधान सचिव (मानव संसाधन विकास), बिहार सरकार
4. **श्री अशोक कुमार सिन्हा,** विकास आयुक्त, बिहार सरकार
5. **श्री विपीन कुमार,** स्थानिक आयुक्त, बिहार सरकार

6. **श्री वी. पी. अगरवाल,** सभापति, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण
7. **डॉ. जितेन्द्र नाथ मिश्रा,** संयुक्त सचिव (नालंदा), विदेश मंत्रालय
8. **गौरंगालाल दास,** उप सचिव, प्रधानमंत्री कार्यालय
9. **आर. रामनाथन,** अतिरिक्त सदस्य, रेलवे बोर्ड
10. **ए. श्रीवास्तव,** महाप्रबंधक, (यांत्रिक) एन. एच. ए. आई (बिहार)
11. **संजीव मित्तल,** संयुक्त सचिव संस्कृति मंत्रालय
12. **सुधीर कुमार,** सलाहकार (प्रशासन) नालंदा विश्वविद्यालय
13. **पदमाकर मिश्रा,** वित्त पदाधिकारी, नालंदा विश्वविद्यालय
14. **डॉ. अंजना शर्मा,** डीन (शैक्षिक योजना)

राष्ट्रीय अनुश्रवण समिति के विशेष आमंत्रित सदस्य श्री नीतीश कुमार मुख्यमंत्री बिहार, प्रोफेसर लार्ड मेधनाद देसाई और श्री पी. के. शाही, शिक्षा मंत्री, बिहार फरवरी 2013 में आयोजित रात्रि भोजन के समय।

विश्वविद्यालय के लिए निधि अर्जित करने हेतु वृत्तिदान समिति का गठन

प्रबंधन मंडल की चौथी बैठक जो जुलाई 2012 को हुई थी, उसमें भारत सरकार से अलग विश्वविद्यालय के लिए निधि अर्जित करने हेतु एक स्वतंत्र तंत्र विकसित करने की त्वरित आवश्यकता पर बल दिया गया था। यह निधि विश्वविद्यालय को आर्थिक स्थिरता प्रदान करेगी साथ ही साथ उसे अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संस्थानों की तरह सक्षम तरीके से योजना बनाने की स्वतंत्रता होगी।

इस विचार को मूर्त्तरूप देने के लिए प्रबंधन मंडल ने एन. के. सिंह की अध्यक्षता में जो एक सांसद एवं प्रबंधन मंडल के सदस्य हैं, एक वृत्तिदान समिति के गठन का निर्णय लिया।

प्रबंधन मंडल ने यह भी निर्णय लिया कि इस समिति के सभापति प्रबंधन मंडल की बैठकों के स्थायी आमंत्रित सदस्य होंगे। इस उत्तरदायित्व को स्वीकर करते हुए श्री सिंह ने कहा कि निजी– सार्वजनिक साझेदारी विश्वविद्यालय के लिए धन उगाही के विभिन्न कारकों में एक कारक हो सकता है।

(बाये से दाये) श्री एन. के. सिंह, सभापति, नालंदा विश्वविद्यालय वृत्तिदान समिति, एवं प्रबंधन मंडल सदस्य श्री मोनटेक सिंह अहलूवालिया, उपाध्यक्ष, योजना आयोग, श्री नीतीश कुमार, मुख्यमंत्री बिहार एवं श्री जार्ज यो, प्रबंधन मंडल सदस्य राजगीर आगमन के समय।

नालंदा विश्वविद्यालय को मिले वृत्तिदान प्रस्ताव

दक्षिण एशिया प्रतिष्ठान की ओर से राजदूत मदनजीत सिंह द्वारा 1 मिलियन यू. एस. डॉलर का प्रस्ताव

दक्षिण एशिया प्रतिष्ठान की ओर से उसके संस्थापक राजदूत मदनजीत सिंह ने नालंदा विश्वविद्यालय को 1 मिलियन अमेरिकी डॉलर का वृत्तिदान प्रस्ताव दिया था। विश्वविद्यालय को मिलने वाला यह प्रथम निजी वृत्तिदान प्रस्ताव था। प्रबंधन मंडल ने कुलपति को इस प्रस्ताव पर आगे बढ़ने और इस उपहार निधि को सर्वश्रेष्ठ तरीके से उपयोग करने के लिए अधिकृत किया।

इसके बाद कुलपति ने 13–17 अप्रैल 2012 को दक्षिण एशिया प्रतिष्ठान की विलियो सुर–मेर (फ्रांस) में हुई सालाना बैठक में भाग लिया जिसका आयोजन राजदूत सिंह ने किया था। वहां उन्होंने प्रतिनिधियों को नालंदा विश्वविद्यालय पर एक प्रस्तुतिकरण दिया। इसके बाद इस निधि को परियोजना अधारित फेलोशिप के लिए व्यय करने के तौर–तरीकों पर बातचीत हुई। इस विषय पर आगे भी प्रोफेसर वीणा सिकरी (उपसभापति एस. ए. एफ. इंडिया) और राजदूत सिंह से दूरभाष पर बातचीत हुई थी।

दुर्भाग्यवश 6 जनवरी 2013 को राजदूत सिंह का देहावसान हो गया। तथापि प्रबंधन मंडल को यह आश्वस्त किया गया कि दक्षिण एशिया प्रतिष्ठान स्वर्गीय सिंह की प्रतिवद्धता को पूरा करेगी।

डॉ. गोपा सभरवाल, कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय फ्रांस में आयोजित दक्षिण एशिया प्रतिष्ठान के वार्षिक बैठक में प्रस्तुतीकरण देते हुए।

सिंगापुर के द्वारा 5–10 मिलियन डॉलर का वृत्तिदान प्रस्ताव

सिंगापुर नालंदा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय के निर्माण के लिए 5–10 मिलियन डॉलर देगी। सिंगापुर के प्रायोजक संस्थाओं ने यह प्रस्ताव भी रखा कि वह मास्टर प्लान के अनुशासनानुसार एवं समय सीमा के अर्न्तगत पुस्तकालय की संरचना एवं उसके निर्माण कार्य को पूरा करना चाहती है।

इस प्रस्ताव को स्वीकृति दी गई है कि निर्माण के समय ये संस्थाएं विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष के साथ आवश्यकताओं के अनुरूप डिजायन पर कार्य करेगी तथा इसे विश्वविद्यालय एवं प्रबंधन मंडल के समक्ष स्वीकृति हेतु प्रस्तुत करेगी।

आस्ट्रेलिया अनुदान के द्वारा पर्यावरण अध्ययन में पीठ की स्थापना

आस्ट्रेलिया की प्रधानमंत्री सुश्री जुलिया गिलार्ड ने 15–17 अक्टूबर 2012 को भारत की अपनी राजकीय यात्रा के दौरान इस बात की पुष्टि की थी कि आस्ट्रेलिया नालंदा विश्वविद्यालय में पर्यावरण अध्ययन हेतु एक पीठ की स्थापना करेगी। जो वर्ष 2013 से प्रारम्भ होगी।

लाओस सरकार के द्वारा 50,000 डॉलर का दान

15 नवम्बर 2012 को लाओस में भारत के राजदूत को विनटेन में लाओस सरकार के द्वारा 50,000 डॉलर का अंशदान प्राप्त हुआ। यह राशि विश्वविद्यालय के बैंक खाते में मार्च 2013 को प्राप्त हुई।

4 अप्रैल 2012 को राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल से पद्म भूषण सम्मान प्राप्त करते हुए श्री जार्ज यो।

विदेश मंत्रालय के लिए गठित सलाहकार समिति का नालंदा विश्वविद्यालय परिसर भ्रमण

विदेश मंत्रालय के लिए गठित सलाहकार समिति के द्वारा 11 एवं 12 फरवरी 2013 को राजगीर एवं नालंदा का भ्रमण किया गया। इस यात्रा में 5 संसद सदस्यों ने भाग लिया था। विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद का आगमन 12 फरवरी की सुबह हुआ। वे कुलपति के द्वारा विश्वविद्यालय के अस्थायी परिसर में समिति को दिये गये प्रस्तुतीकरण के समय मौजूद थे। इसके बाद वे विश्वविद्यालय के निर्माण स्थल पर गये। वहां उन्होंने विश्वविद्यालय के विकास और भविष्य की कार्ययोजना विषयक चर्चा में भाग लिया। बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने अतिथियों के लिए मध्यान्ह भोजन का आयोजन किया था।

विश्वविद्यालय के विकास के लिए आयोजित विचार–विमर्श में भाग लेते हुए विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद एवं सलाहकार समिति के अन्य सदस्यगण।

विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद, प्रस्तावित परिसर के भ्रमण के दौराण निर्माण स्थल के नक्शे को बारीकी से निहारते हुए।

इलिनोस विश्वविद्यालय, अरबना केम्पेन के प्राध्यापकगण विश्वविद्यालय के निर्माण स्थल का मुआयना करते हुए।

इलिनॉस विश्वविद्यालय अरबना केम्पेन (यू. एस. ए.) के प्राध्यापकों का नालंदा विश्वविद्यालय भ्रमण

नालंदा विश्वविद्यालय के सहयोगी संस्थाओं में शामिल इलिनॉस विश्वविद्यालय के कृषि, उपभोक्ता एवं पर्यावरण विज्ञान (ए. सी. ई. एस) महाविद्यालय के प्राध्यापकों के एक समूह के द्वारा मार्च 2013 में विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण किया गया। इन प्राध्यापकों के साथ हुए विमर्श का मुख्य बिन्दु यह रहा कि नालंदा विश्वविद्यालय के पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन संस्थान (एस. ई. ई. एस.) को कृषि, जल–विज्ञान एवं जलवायु परिवर्त्तन जैसे क्षेत्रों में ए. सी. ई. एस. किस प्रकार सहयोग कर सकता है।

प्रोफेसर जोसेफ ई. स्टिगलिज को विश्वविद्यालय के प्रथम प्रकाशन की प्रति भेंट करते हुए डॉ. अंजना शर्मा, डीन (शैक्षिक योजना) नालंदा विश्वविद्यालय।

जोसेफ. ई. स्टिगलिज का नालंदा विश्वविद्यालय का भ्रमण

अमेरिकी अर्थशास्त्री, विश्व बैंक के पूर्व मुख्य अर्थशास्त्री एवं नोबेल पुरस्कार विजेता प्रोफेसर जोसेफ यूजिन स्टिगलिज जो सम्प्रति कोलम्बिया विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं अपनी पत्नी अन्या सिफ्रिन के साथ नालंदा विश्वविद्यालय को देखने आये। वे विश्वविद्यालय के निर्माण स्थल पर गये। उनके सम्मान में राजगीर में दोपहर के भोजन का आयोजन किया था। जिसमें अन्य लोगों के अलावा भारतीय प्रशासनिक सेवा एवं भारतीय पुलिस सेवा के कई प्रशिक्षुओं ने भाग लिया था।

सिंगापुर के विदेश मंत्री से कुलपति की भेंट

20 से 25 मार्च 2013 को कुलपति सिंगापुर के दौरे पर गयी थी और वहां उन्होंने कई बैठकों में भाग लिया था। इन बैठकों में अन्य विषयों के अलावा नालंदा विश्वविद्यालय एवं नालंदा श्री विजया केन्द्र के बीच के सहयोग पर विचार–विमर्श हुआ था। वहां वे येल–एन. यू. एस. सहयोग परियोजना के पदाधिकारियों से भी मिली और परियोजना की प्रगति पर विचार विनिमय किया। इसी दौरान कुलपति डिजायन के लिए गठित ज्यूरी के सदस्य श्री लियू थाई केर से मिली और उन्हें नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना और विशेषतः वास्तु संरचना प्रतियोगिता के विषय में जानकारी दी। कुलपति के सम्मान में श्री जार्ज यो के द्वारा रात्रि भोजन का आयोजन किया गया था जिसमें उन्हें पुस्तकालय निर्माण में अंशदान करने वाली समिति के सदस्यों से परिचय करवाया गया। वे इसके कुछ सदस्यों से बाद में भी मिली।

महामहिम के. शनमुगम विदेश मंत्री के साथ कुलपति डा. गोपा सभरवाल।

कुलपति ने सिंगापुर के विदेशमंत्री महामहिम श्री के शनमुगम के साथ मध्यान्ह भोजन के समय की बैठक में भाग लिया और उन्हें परियोजना की प्रगति की जानकारी दी। उन्होंने कुलपति को निकट भविष्य में ही राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय को देखने आने का आश्वासन दिया।

अकादमिक गतिविधि

वर्ष 2012–13, विश्वविद्यालय की अकादमिक आत्मा को गढ़ने एवं विशेष रूप से उसके बौद्धिक आग्रह से जनमानस को परिचित कराने के मामले में महत्वपूर्ण प्रगति का वर्ष साबित हुआ।

इसके अलावा, इसी वर्ष में उन दो स्कूलों, स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज (एस. एच. एच.) तथा स्कूल ऑफ इकॉलोजी एण्ड एनवायरमेन्ट स्टडीज (एस. ई. ई. एस) के लिए सुचारू तैयारी भी की गयी जिसके विचार पत्र को प्रबंधन मंडल के द्वारा अक्टूबर 2011 में हुई बीजिंग बैठक में स्वीकृति मिली थी।

डीन, शैक्षिक योजना ने उन सभी व्यक्तियों एवं संस्थानों से संपर्क साधा जिनके साथ या जिनसे सलाह और अनुभव हासिल कर इन दोनों स्कूलों के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की योजना और कार्यक्रम की रूपरेखा बनायी जा सकती थी। जिससे विश्वविद्यालय अपने अकादमिक कार्यक्रम की शुरूआत करने वाली है।

प्रबंधन मंडल ने 4 फरवरी 2013 की बैठक में यह भी फैसला लिया था कि सलाहकारों की जो सूची डीन (शैक्षिक योजना) ने प्रस्तावित दो स्कूलों के लिए तैयार की है उसे विशेषज्ञों की सूची मानते हुए इन्हें फैकल्टी नियुक्ति हेतु गठित चयन समिति में भाग लेने हेतु बुलाया जा सकता है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों एवं प्रयोग कर्मियों से विस्तृत विचार–विमर्श करने से फोकस क्षेत्रों को परिमार्जित करने एवं दोनों स्कूलों के लिए अध्यापन की दशा–दिशा तय करने में सहायता मिली। अकादमिक योजना के केन्द्र में, एक तरफ प्राचीन नालंदा की विरासत को पुर्नजीवित करना था तो दूसरी तरफ बौद्धिक रूप से उद्दीपित करने वाला एक ऐसे विशिष्ट पाठ्यक्रम के निर्माण का लक्ष्य भी अंर्तनिहित था जो विश्वविद्यालय की स्थानीय, क्षेत्रीय, एशियाई एवं भूमंडलीय छवि को प्रतिबिंबित करता हो। इन दोनों स्कूलों की मूलभूत परिकल्पना में अंतर शैक्षणिक तथा अंतर एशियाई संबंधों को और प्रागाढ़य बनाना है।

दो स्कूलों (पाठ्यक्रमों) का स्वरूप ग्रहण

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण अध्ययन संस्थान (एस. ई. ई. एस.)

नालंदा का कृषकीय तथा ग्रामीण भौगोलिक परिक्षेत्र इस स्कूल के विकास के लिए बेहद अनुकूल है क्योंकि यहां पर्यावरणीय और पारिस्थितिकी चुनौतियों की जानकारी प्राप्त करना न केवल सैद्धांतिक वरन वास्तविक और व्यवहारिक भी है।

यह संस्थान मूल अवधारणा में *'समस्या प्रतिमुख'* है, केवल सिद्धान्त केन्द्रित नहीं।

इसके सलाहकारों विशेषकर येल स्कूल ऑफ फोरेस्ट्री एण्ड एनवायरमेन्टल स्टडीज के विद्वानों के साथ विस्तृत विचार–विमर्श करने के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि आवश्यकता आधारित अध्ययन एवं अनुसंधान पर जोर देते हुए हमारा मुख्य लक्ष्य बिहार, भारत एवं एशिया परक समस्याओं की पूर्ति का होना चाहिए। इसी सर्व सम्मति के आधार पर इस स्कूल के मुख्य विषय का निर्धारण हुआ है, जो है– जल प्रबंधन, जलवायु परिवर्त्तन, कृषि संरक्षण, मानव पारिस्थितिकी उर्जा अध्ययन और आपदा प्रबंधन।

एस. ई. ई. एस. के द्वारा अन्तर विषयक डिग्री देने का विकल्प

पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विषय में इन दिनों यह समझ विकसित हुई है कि केवल वैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर ही पर्यावरणीय चुनौतियों से नहीं निबटा जा सकता है। अतः नालंदा में, ऐसे अंतर विषयक ज्ञान से परिपूर्ण स्कूल की स्थापना करने का निर्णय हुआ जो विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी के तथ्यों को कारगर तरीके से एक–दूसरे में जोड़ते हुए बहु विषयक ज्ञान के आधार पर पर्यावरणीय समस्याओं का श्रेष्ठतर एवं दीर्घकालिक समाधान प्रस्तृत करे।

इस स्कूल के अकादमिक कार्यक्रम अनुसंधान एवं बहु विषयक शिक्षण आधारित होंगे जिसमें विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी के दृष्टिकोण को समायोजित किया जायेगा। तथापि, पहले और दूसरे सेमेस्टर के कुछ अनिवार्य पाठ्यक्रम दोनों विषयों से लिये जायेंगे। इसके पीछे मूल धारणा यह है कि स्नातक स्तर पर उत्तीर्ण छात्र, (विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी) जिस विषय से भी संबंधित हो उन्हें दूसरे विषय में भी प्रशिक्षण लेने में सहुलियत हो सके।

'शिक्षा का यह दृश्टिकोण छात्रों को ऐसे अवसर उपलब्ध करायेगा जिससे न केवल उनकी बौद्धिक परिधि का विस्तार होगा बल्कि परंपरागत प्रणाली में विषय नहीं बदल सकने की कमी भी पूरी हो सकेगी। जाहिर है नालंदा का प्रस्तावित ज्ञान मॉडल न केवल उसे अन्य संस्थानों पर बढ़त दिलायेगा अपितु वैसे शिक्षकों एवं छात्रों को आकर्षित करेगा जो विषयों की कठोर शैक्षणिक सीमा से परे रहकर कार्य करना चाहते हैं। इसके अतिरिक्त यहां की शिक्षण विधि, जैसा की पहले कहा गया है, प्राचीन नालंदा की विशिष्ट शैक्षणिक आदर्श को प्रतिध्वनित करेगा।'

इतिहास अध्ययन केन्द्र (एस. एच. एस.)

इस स्कूल की अकादमिक योजना में उल्लेखनीय प्रगति एवं परिष्कृत विकास प्रबंधन मंडल की लघु समिति जिसमें प्रोफेसर वांग गुंगवु, सुगाता बोस, लार्ड मेघनाद देसाई और डॉ. तानसेन सेन शामिल थे के महत्वपूर्ण योगदान के फलस्वरूप हो सका।

इसके अलावा इसी समय कई राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चित्ताकर्षक परियोजनाओं और सहयोग को मूर्तरूप दिया जा रहा था। विश्वविद्यालय के द्वारा सलाहकारों की संख्या में अभिवृद्धि कर इस स्कूल के लिए विश्व के विभिन्न भागों में अवस्थित संस्थानों के साथ सहयोग की संभावना को ढूंढ़ने पर भी बल दिया गया था।

एस. एच. एस. के माध्यम से इतिहास अध्ययन में विशिष्ट परम्परा एवं नए रूझानों का समागम

प्राचीन नालंदा के खंडहर के समीप नए नालंदा विश्वविद्यालय स्थापित करने का निर्णय और बिहार में पुरातात्विक स्थानों का प्रचुर भंडार ये दोनों स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज की स्थापना के आधार बने। प्राचीन नालंदा अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का अद्वितीय स्थान था और जो अन्तर एशियाई संपर्क को विकसित कर सभ्यता संवाद का एक प्रमुख केन्द्र भी बना। इस तरह नालंदा विश्वविद्यालय का यह केन्द्र, प्राचीन नालंदा की विशिष्ट परंपरा एवं दुनिया के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में इतिहास अध्ययन की नई विधा, दोनों का निर्वहन करेगा। राजगीर में फिर से इतिहास अध्ययन एवं शोध का वह बेजोड़ अवसर पुर्नजीवित हुआ जो कभी प्राचीन मगध एवं पुरातन नालंदा की अपूर्व ऐतिहासिक चेतना का अबलम्ब हुआ करता था।

एस. एच. एस. में फेकल्टी नियुक्ति की प्रक्रिया एवं विधिवत पठन–पाठन शुरू होने से पूर्व ही राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान के साथ सहयोग के

आधार पर यह निर्णय लिया गया था कि इसमें निम्नांकित प्रमुख अध्ययन क्षेत्र होंगे। ये हैं– भूमंडल (ग्लोबल) इतिहास, अन्तर एशियाई सम्बन्ध, पुरातत्व, कला का इतिहास, आर्थिक इतिहास और इतिहास का दर्शन।

फरवरी 2013 में हुई संचालक मंडल की पांचवी बैठक में अकादमिक मोर्चे पर हुई प्रगति की समीक्षा करते हुए यह तय हुआ कि नियुक्तियों के लिए गठित चयन समिति में प्रबंधन मंडल का कोई विशेष प्रतिनिधित्व नहीं होगा। प्रबंधन मंडल की ओर से कुलपति इन समितियों में प्रतिनिधित्व करेगी।

नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा दक्षिण बिहार का अनुसंधान एवं अध्ययन

दोनों स्कूलों (संस्थानों) के अकादमिक लक्ष्यों को निर्धारित करते समय यह योजना भी बनी कि दोनों संस्थानों के तत्वावधान में कुछ ऐसी परियोजनाओं पर कार्य की आवश्यकता है जिससे विश्वविद्यालय की पहचान उत्कृष्ट अनुसंधान को बढ़ावा देने वाले केन्द्र के रूप में यथाशीघ्र स्थापित हो सके।

ये परियोजनाएं यदि एक तरफ उपरोक्त लक्ष्यों को ध्यान में रखकर तैयार की गई थी तो दूसरी तरफ प्रबंधन मंडल के द्वारा भी कई बार विधिवत पठन–पाठन शुरू करने एवं प्राध्यापकों की बहाली से पहले कुछ अति प्रभावकारी परियोजनाओं को शुरू करने का विचार रखा गया था।

नालंदा विश्वविद्यालय दक्षिण बिहार के उस क्षेत्र के लिए शोध एवं अध्ययन कार्य को बढ़ावा देगा जहां विश्वविद्यालय अवस्थित है। ये परियोजनाएं जो विशेषकर नालंदा उसकी अवस्थिति एवं इतिहास पर आधारित है, संक्षिप्त रूप से इस प्रकार हैः–

1. नालंदा श्रोत पुस्तक सभी ज्ञात भाषाओं में नालंदा की जानकारी देने वाले श्रोतों का सार संग्रह होगा।
2. राजगीर बोधगया के बीच 65 किलोमीटर ह्वेनसांग पथ की पुरातात्विक खोज
3. राजगीर केन्द्रित खोज
4. प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की परिधि के गांवों का प्रलेखन

5. इसके परियोजना क्रम (2), (3) एवं (4) के. पी. जायसवाल संस्थान पटना के सहयोग से संचालित होना है। इन परियोजनाओं से विभिन्न विषयों के बहुमुखी प्रतिभाओं को जोड़ने की योजना है जैसे– पुरातत्व, इतिहास, पुरालेख शास्त्र, मुद्राशास्त्र, भूगर्भ–शास्त्र कला इतिहास, प्रतिमा विज्ञान, समाजशास्त्र, मानव शास्त्र, पर्यावरण इतिहास वनस्पति विज्ञान और पुरा नववनस्पति विज्ञान। इसके साथ–साथ इसमें फोटोग्राफर नक्शानवीस एवं सर्वेयर आदि लोगों को शामिल करने की योजना है।

6. खुदावक्श पुस्तकालय, पटना के साथ ''शाहनामा'' पुस्तक का डिजीटीकरण।

7. निरावृत हो रही राजगीर की पहाड़ियों के पारितंत्र को बहाल करना। इस परियोजना में ऐसे पौधे लगाये जाने की योजना है जो न केवल पशुचारा देगी बल्कि इससे परियोजना के सहभागी ग्रामीणों को आमदनी भी होगी।

8. नालंदा वॉरलॉग गांव परियोजना जिसके अर्न्तगत विश्वविद्यालय के मध्य में अवस्थित मुदफ्फरपुर गांव को लिया गया है को आदर्श गांव बनाने का लक्ष्य है। हम इस गांव के संदर्भ में 'रूबनाइजेशन' विचार का मूल्यांकन करना चाहते हैं। लक्ष्य इस गांव की बिजली पानी की व्यवस्था को विश्वविद्यालय की व्यवस्था से जोड़ने का है साथ ही गांव की स्वच्छता के मामले में विश्वविद्यालय सहयोग करेगी। तात्पर्य यह है कि यह गांव विश्वविद्यालय के समस्त बुनियादी सुविधाओं के प्रबंधन से जुड़ेगी।

9. परियोजना संख्या (6) एवं (7) वारलॉग इन्स्टीच्यूट ऑफ साउथ एशिया अर्थात वी. आई. एस. ए. के सहयोग से संचालित होना है।

राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ हुए सहयोग समझौते

कुलपति एवं डीन (ए. पी.) के द्वारा स्थानीय एवं विश्वस्तरीय के चुनिंदा संस्थानों के साथ पर्याप्त विचार–विमर्श किया गया था जिसका उद्देश्य विश्वविद्यालय की शैक्षणिक योजना उसके सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व एवं इसे पुनर्जीवित करने और योजना से सहयोगी संस्थाओं को परिचित कराना था।

स्थानीय संस्थाओं के साथ सहयोग

प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की भांति नया विश्वविद्यालय भी क्षेत्रीय, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक पारितंत्र का केन्द्र बनने की प्रतिबद्धता के कारण पटना, बिहार के कुछ गिने–चुने संस्थानों के साथ कार्य करने का इच्छुक है।

भारतीय पुरातत्व सर्वे (ए. एस. आई): नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा राजगीर में नालंदा पर स्थायी प्रदर्शनी लगाने हेतु भारतीय पुरातत्व सर्वे के साथ प्रारंभिक स्तर पर विचार–विमर्श किया गया था। जिसमें इतिहास अध्ययन संस्थान (एस. एच. एस.) के द्वारा पुरातत्व विषयक पाठ्यक्रम के निर्धारण में भारतीय पुरातत्व सर्वे की संभावित भूमिका पर भी चर्चा हुई थी। जिस पर सहमति बनी थी भारतीय पुरातत्व सर्वे के अधीन पुरातत्व संस्थान के साथ संयुक्त व्यवस्था के तहत ये पाठ्यक्रम चलाये जा सकते हैं।

विश्वविद्यालय के द्वारा भारतीय पुरातत्व सर्वे से यह भी अनुरोध किया गया था कि वह प्रथमतः राजगीर नालंदा के आसपास के पुरातात्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्थानों की खोज एवं खुदाई शुरू करें। बाद में इस कार्य को पूरे क्षेत्र के लिए किया जाय।

खुदावक्श पुस्तकालयः पटना में अवस्थित खुदावक्श पुस्तकालय उन संस्थानों में शामिल है जिसके पास इस्लामिक पुरावशेष के महत्वपूर्ण निजी संग्रह एवं मध्यकालीन ग्रंथों की दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित है। विश्वविद्यालय 15 वीं शताब्दी की पुस्तक *'शाहनामा'* की प्रतिकृति संस्करण प्रकाशित करना चाहती है। इस कार्य में वह खुदावक्श पुस्तकालय को तकनीकी सहयोग देगी जबकि इसके लिए वित्त प्रबंध, प्रकाशन एवं वितरण का कार्य पुस्तकालय खुद करेगी।

के. पी. जायसवाल संस्थानः राज्य की महत्वपूर्ण विरासत की खोज और संरक्षण के उसी महत्वपूर्ण उद्देश्य की प्राप्ति के लिए विश्वविद्यालय ने पटना स्थित इस ख्याति प्राप्त संस्थान के निदेशक से बिहार की विरासत को ढूंढ़ने एवं उसे विशद ऐतिहासिक ज्ञान को लिपिबद्ध कर आम लोगों तक पहुंचाने के उद्देश्य से सहयोगी अनुसंधान परियोजना में भागीदार बनने हेतु प्रेरित किया।

वैश्विक संस्थानों के सहयोग समझौते

आस्ट्रेलिया भारत संस्थान (ए. आई. आई.)ः नालंदा विश्वविद्यालय ''समकालीन भारत'' विषय पर ए. आई. आई. के साथ एक संयुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने की योजना रखती है। उल्लेखनीय है कि आस्ट्रेलिया–भारत संस्थान, आस्ट्रेलिया में भारत विषयक प्रमुख शिक्षा केन्द्र है। मेलबोर्न विश्वविद्यालय से संबंद्ध यह संस्थान दोनों देशों के संबंधों का प्रगाढ़ करने के उद्देश्य से कई पाठ्यक्रमों का संचालन करती है।

ए. आई. आई. और एन. यू. दोनों अन्तर क्षेत्रीय सम्बन्धों को प्रोत्साहित और मजबूत करने हेतु वचनबद्ध है। इस तरह से यह संस्था नालंदा विश्वविद्यालय का स्वभाविक सहयोगी है। फलतः दोनों संस्थानों के बीच आपसी संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से कई चरणो में विचार–विमर्श हुआ है। इस समय ऐसी नई तकनीक को ढूढ़ने की कोशिश हो रही है, जिससे लोगों को विचारों के आदान–प्रदान करने एवं नालंदा विश्वविद्यालय के अकादमिक मत के अनुरूप लघु कालीन पाठ्यक्रमों को शुरू करने में सहायता मिल सके। ''समकालीन भारत'' विषय पर जो संयुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम चलाये जायेंगे वह क्रेडिट आधारित होंगे। यह मेलबोर्न विश्वविद्यालय के तत्वावधान में शुरू होंगे जिसमें सहयोगी संस्था के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय का हस्ताक्षर होगा।

ए. आई. आई और एन. यू दोनों इस कार्यक्रम को वित्तीय सहयोग देंगे। इसके अलावा ''समकालीन भारत'' आधारित इस पाठ्यक्रम के विचार पत्र को संयुक्त रूप से नालंदा विश्वविद्यालय और ए. आई. आई. तैयार करेगी।

एकेडमी ऑफ कोरियन स्टडीज (ए. के. एस.)ः विश्वविद्यालय ने ए. के. एस. को साथ तुलनात्मक एशियाई अध्ययन एवं एशिया में सांस्कृतिक अर्न्तसम्बन्ध विषयक कार्यों में सहयोगी बनाने की योजना पर कार्य कर रही है।

एकेडमी ऑफ कोरियन स्टडीज की स्थापना दक्षिण कोरिया सरकार के द्वारा 1978 में की गयी थी। कोरिया में समाज विज्ञान में अनुसंधान करने में अग्रतर इस संस्था का लक्ष्य तीव्र औद्योगिकीकरण से उत्पन्न वैचारिक विभ्रम से छुटकारा दिलाना है।

इसके अलावा नालंदा विश्वविद्यालय ए. के. एस. के साथ मिलकर अन्तर आशियान संबंधों पर एक अनुसंधान केन्द्र की स्थापना करेगी जो विविध सम्मेलनों एवं प्रकाशनों के माध्यम से ज्ञानार्जन को बढ़ावा देगी। प्रस्ताव में यह भी है कि नालंदा विश्वविद्यालय ए. के. एस. के साथ मिलकर एक केन्द्र अथवा जापान के कसाई विश्वविद्यालय जो एशियाई संबंधों का केन्द्र है, तीनों मिलकर सहायता संघ की स्थापना कर सकते हैं।

वोरलॉग इन्स्टीच्यूट ऑफ साऊथ एशिया (बी. आई. एस. ए): क्षेत्रीयता से परे भूमंडलीयता की ओर बढ़ते हुए, अप्रैल–जुलाई 2012 के प्रारंभिक समय में मेक्सिकों के अन्तर्राष्ट्रीय बाजरा एवं गेहूँ उन्नति केन्द्र (*सी. आई. एम. एम. वाई. टी).* एवं इसके दक्षिण एशियाई संस्थान जो वोरलॉग इन्स्टीच्यूट ऑफ साउथ एशिया (बी. आई. एस. ए.) के नाम से जाना जाता है के पदाधिकारियों के साथ सहयोग को साकार करने को लेकर व्यापक चर्चा हुई थी।

ई. सी. ए. एफ. और ई. एफ. ई. ओः विश्वविद्यालय ई. ए. ई. ओ. के साथ यूरोपियन कॉनसॉटियम फॉर एशियन फिल्ड स्टडी के तहत सहयोग बढ़ाने की तैयारी कर रही है।

ई. एफ. ई. ओ. अर्थात इकॉल फ्रांकेस डी. एक्सट्रीम ओरिएन्ट की स्थापना 1989 में हुई थी और इस समय दक्षिण, दक्षिण पूर्व, पूर्व एवं पूर्वोत्तर एशिया की विरासत पर अनुसंधान के लिए उसके पास शोध केन्द्र का विशाल नेटवर्क है।

ई. सी. ए. एफ. और नालंदा विश्वविद्यालय संयुक्त रूप से अनुसंधान कार्यक्रम और पाठ्यक्रम का निर्माण करेंगे। यह कार्यक्रम ई. एफ. ए. ई. ओ. और ई. सी. एफ. के विद्वानों की देखरेख एवं नालंदा विश्वविद्यालय की निगरानी में शुरू होंगे, जो राजगीर–गया–बोधगया क्षेत्र के भीतर कार्य करेंगे। इस सहयोग पर होने वाले खर्च का भार दोनों संस्थान उठायेंगे। इस साझेदारी का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे लोकहित समूह की स्थापना करना है जो एस. एच. एस. के लिए सबल नवोन्वेषी अन्तर विषयक क्षेत्र अध्ययन योजना को बढ़ावा देने वाले संदर्भ समूह के रूप से कार्य कर सके।

प्रस्ताव यह भी है कि नालंदा विश्वविद्यालय भारतीय पुरातत्व सर्वे से आवश्यक अनुमति प्राप्त कर उन दोनों संस्थानों के साथ नालंदा खंडहर एवं इस क्षेत्र के प्राचीन स्थानों को ढूंढ़ने लिपिबद्ध करने एवं उसे अभिलेखाकार में सुरक्षित रखने के लिए एक अतिविशेषतापूर्ण नव प्रौद्योगिक प्रेरित योजना के निर्माण के लिए कार्य करेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थानः विश्वविद्यालय ने अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान के साथ अपने संबंधों की शुरूआत के लिए 2–3 दिनों के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन करने की योजना बनाई है जिसमें राजगीर में एशियाई विरासत के मुद्दे पर विचारों का आदान–प्रदान हो सके। यह सम्मेलन स्नातक छात्रों के लिए एक संयुक्त शोध कार्यक्रम की रूपरेखा भी तैयार करेगी। नालंदा विश्वविद्यालय और अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान अपने–अपने छात्रों और प्राध्यापकों को एक साथ लाकर एक ऐसे पाठ्यक्रम का निर्माण करना चाहते हैं जो दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

इन स्नातक छात्रों को नालंदा आई. आई. ए. एस. की संयुक्त डिग्री देने की योजना है।

अन्तर्राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान लेडेन, नीदरलैंड स्थित शोध एवं विनिमय केन्द्र है। यह एशिया के संदर्भ में बहुविषयक तथा तुलनात्मक अध्ययन को बढ़ावा देता है।

क्योटो विश्वविद्यालयः नालंदा विश्वविद्यालय एक शांति केन्द्र की स्थापना के लिए क्योटो विश्वविद्यालय के साथ संपर्क में है।

क्योटो विश्वविद्यालय जापान के आठ राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में है और दूसरा सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय है। यह एशिया का सर्वाधिक ऊँचे दर्जे के विश्वविद्यालय में एक है।

जापान सरकार जिसने क्योटो विश्वविद्यालय के साथ सहयोग करने की अनुशंसा की थी ने जापान में शांति संस्थान की स्थापना की पुष्टि की है। यह संस्थान नालंदा विश्वविद्यालय के द्वारा निकट भविष्य में स्थापित और प्रारम्भ होने वाली ''स्कूल ऑफ इन्टरनेशनल रिलेशंस एण्ड पीस स्टडीज'' को हर संभव सहायता मुहैया करायेगा।

नालंदा श्री विजया केन्दः सिंगापुर के दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन संस्थान (आई. एस. ई. ए. एस.) द्वारा संचालित नालंदा श्री विजया केन्द्र, की स्थापना नालंदा विश्वविद्यालय के लिए एक शोध केन्द्र की आवश्यकता पूर्ति करने हेतु की गयी थी, जो भविष्य में उसके शोध कार्यक्रमों को दिशा दे सके। अब नालंदा विश्वविद्यालय उनके कुछ कार्यक्रमों की जिम्मेवारी लेने को उद्यत हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय एक संयुक्त शोध परियोजना जो एशियाई देशों के पारस्परिक संबंधों विशेष रूप से इन संबंधों में दक्षिण–पूर्व–एशिया की भूमिका को लेकर है, को विकसित करेगी।

इलिनॉस विश्वविद्यालय, अरबना केम्पेनः नालंदा विश्वविद्यालय और इलिनोस विश्वविद्यालय से संबद्ध 'कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चरल कन्ज्यूमर एण्ड एनवायरमेन्टल साइंसेज (ACES) के बीच स्कूल ऑफ इकॉलोजी एण्ड एनवायरमेन्ट स्टडीज से आपसी सहयोग बढ़ाने को लेकर बातचीत चल रही है।

इलिनोस विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा श्रेष्ठ विश्वविद्यालय के तौर पर दुनिया भर में है। कॉलेज ऑफ ए. सी. ई. एस. दुनिया का एक अगुआ संस्थान है जिसे कृषि, उपभोक्ता और पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल है।

येल विश्वविद्यालयः येल विश्वविद्यालय (अमेरिका) नालंदा विश्वविद्यालय के एस. ई. ई. एस. को उभारने में सहयोग देगी।

येल विश्वविद्यालय की स्थापना 1701 ईसवी में हुई थी और यह संयुक्त राज्य अमेरिका का तीसरा सर्वाधिक प्राचीन उच्च शिक्षा का केन्द्र है। यह एक निजी आइवी लीग अनुसंधान विश्वविद्यालय है जो न्यू हेवेन, कॉनेक्टिकट में अवस्थित है।

नालंदा विश्वविद्यालय, एस. ई. ई. एस. में पाठ्यक्रम के निर्धारण एवं प्राध्यापकों की खोज में येल विश्वविद्यालय से सहयोग और दिशा निर्देश लेने का इच्छुक है। येल का प्रस्ताव है कि नालंदा का पाठ्यक्रम अन्तरविषयक होना चाहिए जिसमें कई फोकस क्षेत्रों, जैसे कृषि, जल–विज्ञान, आपदा प्रबंधन, मानव पारिस्थितिकी और जलवायु परिवर्तन जैसे विषय एक दूसरे से जुड़े हो। इतना ही नहीं येल विश्वविद्यालय ने यह भी सुझाव दिया है कि विश्वविद्यालय को अपने विभिन्न संस्थानों के बीच आपसी सहयोग बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

नालंदा फेलोशिप प्रोग्राम का प्रारंभ

नालंदा फेलोशिप प्रोग्राम जिसे प्रबंधन मंडल के द्वारा जुलाई 2012 की बैठक में स्वीकृति मिली थी, औपचारिक रूप से जनवरी 2013 में प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया में विज्ञापन के माध्यम से घोषित हुआ। विज्ञापन में 2014 में शुरू होने वाले दो स्कूलों (विषयों) से संबद्ध फेलोशिप के लिए आवेदन आमंत्रित किये गये थे।

ये आवेदन दोनों स्कूलों में वरीय फेलो, फेलो एवं कनीय फेलो के लिए आमंत्रित किये गये थे।

विज्ञापन के जवाब में विश्वविद्यालय के पास भारत एवं अन्य देशों से 87 आवेदन आये जिसमें 34 आवेदन स्कूल ऑफ इकॉलोजी एण्ड एनवायरमेन्ट स्टडीज के लिए एवं शेष 53 आवेदन स्कूल ऑफ हिस्टोरिकल स्टडीज के लिए आये थे। आवेदनों में अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिस्पर्द्धा का स्वरूप इस तथ्य के साथ प्रतिबिंबित हुआ कि ये आवेदन जर्मनी, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, हांगकांग, जापान, फ्रांस, नीदरलैंड, बांग्लादेश वियतनाम, स्वीटजरलैंड और सिंगापुर जैसे देशों के विद्वानों के द्वारा भेजे गये थे।

प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला का प्रारम्भ

विश्वविद्यालय के द्वारा अपने प्रतिष्ठित व्याख्यान माला की शुरूआत 2 अगस्त 2012 को की गयी। इसे लोगों के बीच विचारों के पोषण एवं आदान–प्रदान करने के मंच के रूप में स्थापित करना था। इस श्रृंखला के माध्यम से विश्वविद्यालय सर्जनात्मक एवं आलोचनात्मक विचारो को प्रोत्साहित करना चाहती है।

साथ ही यह उम्मीद की जा रही है, इससे नए ज्ञान के प्रसार में वृद्धि होगी और लोग विचारों के विनिमय के माध्यम से ज्ञान और संस्कृति को विस्तार दे सकेंगे। इस श्रृंखला की खासियत यह थी कि इसके व्याख्यान नई दिल्ली और पटना या/और राजगीर, बिहार में आयोजित किये गये थे।

प्रोफेसर आयशा जलाल का व्याख्यानः इस व्याख्यान श्रृंखला का पहला व्याख्यान प्रोफेसर आयशा जलाल मैरी रिचर्डशन प्रोफेसर ऑफ हिस्ट्री, टफ्टस विश्वविद्यालय मेसाच्यूटस, अमेरिका के द्वारा दिया गया। विषय था ''द पिटी आफ पार्टीशन : मन्टो एज विटनेस टु हिस्ट्री''। यह मन्टो की जन्म शताब्दी की याद में आयोजित किया था। सआदत हसन मन्टो एक ऐसे लेखक थे जिन्होनें विभाजन के भयानक समय के दिन प्रतिदिन की अवस्था का अत्यन्त मर्मस्पर्शी चित्रण अपने साहित्य में किया है।

आयशा जलाल, प्रोफेसर इतिहास विभाग टफटस विश्वविद्यालय (यू. एस. ए.) प्रतिष्ठित व्याख्यान माला के अर्न्तगत ''द पिटी ऑफ पार्टीशन मन्टो एज विटनेस टु हिस्ट्री'' विषय पर व्याख्यान देती हुई।

प्रोफेसर लार्ड मेघनाद देसाई का व्याख्यानः इस श्रृंखला का दूसरा व्याख्यान 7 सितम्बर, 2012 को लार्ड मेघनाद देसाई जो लंदन स्कूल ऑफ इकॉनोमिक्स के भूतपूर्व प्रोफेसर और प्रबंधन मंडल के सदस्य हैं के द्वारा, द भागवत गीता : ए सेक्युलर इन्क्यावयरी इन टु ए सेकेंड टेक्सट विषय पर दिया गया। ये दोनों व्याख्यान नई दिल्ली और पटना दोनों स्थानों पर दिये गये थे।

प्रोफेसर लार्ड मेघनाद देसाई, प्रतिष्ठित व्याख्यानमाला के अर्न्तगत 'द भागवत गीता : ए सेक्युलर इनक्वायरी इन टु ए सेक्रेट टेक्सस्ट विषय पर व्याख्यान देते हुए।

प्रोफेसर आन्द्रे बेंते का व्याख्यानः इस श्रृंखला का अंतिम व्याख्यान प्रोफेसर आन्द्रे बेंते द्वारा दिया गया था। प्रोफेसर बेंते दिल्ली विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रोफेसर और एन. ई. एच. यू. विश्वविद्यालय के कुलपति हैं। उन्होंने यह व्याख्यान फरवरी 2013 में पटना और राजगीर में दिया था जिसका विषय था ''सोसियोलॉजिकल रिजनिंग''।

प्रोफेसर आन्द्रे बेंते प्रतिष्ठित व्याख्यान माला के अर्न्तगत ''सोशियोलॉजिकल रिजनिंग' विषय पर व्याख्यान देते हुए

नालंदा विश्वविद्यालय पुस्तकालय को प्राप्त प्रथम वैयक्तिक संग्रह

पुस्तकालय को प्रथम उपहार के रूप में मध्यकालीन चीन एवं कोरियन इतिहास से संबंधित विशाल संग्रह 16 अक्टूबर 2012 को प्राप्त हुआ। यह स्वर्गीय प्रोफेसर केन गार्डिनर जो आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी से सम्बद्ध थे का संग्रह है जिसे उनकी विधवा के द्वारा उनके पूर्व छात्र पंकज मोहन के आग्रह पर विश्वविद्यालय को उपहार स्वरूप दिया गया।

यह संग्रह राजगीर कार्यालय में प्रदर्शन हेतु रखा गया है।

नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का पटना में आयोजन

नालंदा विश्वविद्यालय का प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन जुलाई 2012 को पटना में हुआ। यह सेमिनार जिसका विषय ''सिविलाइजेशनल डायलॉग एण्ड द आशियान'' था, संयुक्त रूप से भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद् नालंदा विश्वविद्यालय और बिहार सरकार के द्वारा आयोजित किया गया था। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में कई गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

सचिव (पूर्व) विदेश मंत्रालय श्री संजय सिंह ने जहां अतिथियों का स्वागत किया वहीं प्रोफेसर अमर्त्य सेन के द्वारा मुख्य संबोधन दिया गया। श्री जार्ज यो ने उद्घाटन भाषण दिया। प्रोफेसर सुगाता बोस, प्रोफेसर वांग वेंगवई और डॉ. तानसेन सेन ने नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल की ओर से सम्मेलन के अकादमिक सत्रों में भाग लिया। इस तीन दिवसीय सम्मेलन में कई एशियाई देशों और अन्य देशों के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

नालंदा विश्वविद्यालय के पहले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'सिविलाइजेशनल डायलॉग वीटवीन इंडिया एण्ड अशियान' का उद्घाटन सत्र

आशियान–भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के अवसर पर नालंदा विश्वविद्यालय के प्रथम प्रकाशन का विमोचन

उपरोक्त सम्मेलन की कार्यवाही को अल्पकाल में ही संकलित कर नालंदा विश्वविद्यालय के प्रथम प्रकाशन के रूप में पुस्तक जिसका शीर्षक *"सविलाइजेशन डायलॉग – एशियन इन्टर कनेक्शन्स एण्ड क्रॉस कल्चरल एक्सचेन्जेज"* (नई दिल्ली, मनोहर, 2013) है, प्रकाशित हुआ। इस पुस्तक का विमोचन श्री सलमान खुर्शीद विदेश मंत्री भारत सरकार के द्वारा 20–21 दिसम्बर को नई दिल्ली में आशियान–भारत स्मारक शिखर सम्मेलन के मौके पर किया गया। यह शिखर सम्मेलन आशियान के साथ भारत की संवाद परक साझेदारी के 20 वें तथा शिखर स्तरीय साझेदारी के 10 वें सालगिरह के अवसर पर आयोजित था।

इस अवसर पर आशियान देशों के सभी विदेश मंत्री उपस्थित थे। इस पुस्तक में नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल के तीन सदस्यों, लार्ड मेघनाद देसाई, प्रोफेसर सुगाता वोस और प्रोफेसर वांगवेई के लेख संकलित किये गये हैं।

यह प्रथम प्रकाशन है जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय के लोगो (प्रतीक चिन्ह) का इस्तेमाल हुआ है और इसे विश्वविद्यालय की डीन (ए. पी.) डॉ. अंजना शर्मा ने संपादित किया है।

नालंदा विश्वविश्वविद्यालय के पहले प्रकाशन का विधिवत विमोचन करते हुए विदेश मंत्री श्री सलमान खुर्शीद

मेकांक–गंगा क्षेत्र के लिए उभय पुरालेखीय संसाधन केन्द्र की स्थापना

विदेश मंत्रालय के आग्रह पर डीन (शैक्षणिक योजना) के द्वारा क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए मेकांक–गंगा उभय संदर्भ अभिलेख केन्द्र की स्थापना के मुद्दे पर एक संक्षिप्त नोट तैयार किया गया था। इस केन्द्र को मेकांक–गंगा सहयोग के ढ़ाचे के अनुरूप स्थापित करने का प्रस्ताव दिया गया था। इस दस्तावेज पर 3–4 सितम्बर 2012 को आयोजित छठे मेकांग–गंगा सहयोग पर आधारित मंत्री स्तरीय बैठक में विचार–विमर्श हुआ और इसे स्वीकार कर लिया गया।

अमर्त्य सेन के साथ सार्वजनिक विचार मंथन 'नालंदा : द वे अहेड' का आयोजन

विश्वविद्यालय के द्वारा दिनांक 30 जुलाई 2012 को एक लोक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इंडियन एक्सप्रेस अखबार के प्रधान संपादक श्री शेखर गुप्ता और अमर्त्य सेन के बीच हुए इस संवाद का विषय था ''नालंदा द वे अहेड''। इस अवसर पर कुलपति के द्वारा नालंदा पर एक प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर सुगाता बोस का संबोधन और श्री एन. के. सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही।

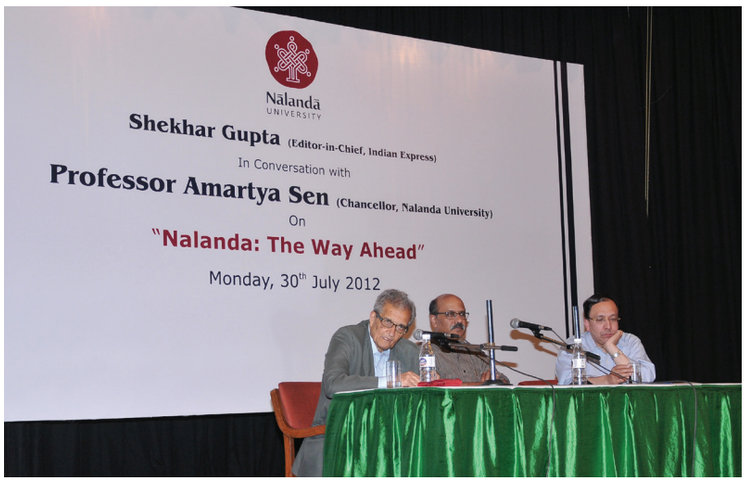

प्रोफेसर अमर्त्य सेन कुलाधिपति नालंदा विश्वविद्यालय, इंडियन एक्सप्रेस के प्रधान संपादक श्री शेखर गुप्ता से संवाद करते हुए।

फिलिप जी. अटवैक के साथ 'इनविजनिंग नालंदा' विमर्श का आयोजन

विश्वविद्यालय के द्वारा दिनांक 7 नवम्बर 2012 को नई दिल्ली में एक विमर्श का आयोजन किया गया था। इस विमर्श का विषय था 'इनविजनिंग नालंदा' और इसे प्रोफेसर जी. अटवैक जो अन्तर्राष्ट्रीय उच्च शिक्षा केन्द्र बॉस्टन कॉलेज अमेरिका से संबद्ध हैं के लिए आयोजित किया गया। नालंदा विश्वविद्यालय को एक प्रमुख ज्ञान केन्द्र के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से आयोजित इस विमर्श में कई अकादमिक एवं प्रशासनिक हस्तियों को अपने विचार रखने हेतु आमंत्रित किया गया था।

बाह्य सम्मेलन

टेलीग्राफ संवादः कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल ने टेलीग्राफ संवाद कार्यक्रम में हिस्सा लिया। यह कार्यक्रम 6 अप्रैल 2012 को टेलीग्राफ समाचार पत्र के द्वारा पटना में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में सांसद श्री एन. के. सिंह जो नालंदा विश्वविद्यालय प्रबंधन मंडल के संदस्य भी है ने भी भाग लिया। संवाद का विषय था ''इन इट्स सेन्टेनरी इयर, बिहार नीड्स ए स्ट्रांग रिजनल आइडेनटिटी''। श्री सिंह और डॉ. सभरवाल दोनों ने इस विचार के पक्ष में अपने मत रखे।

''इन विजनिंग नालंदा' में विमर्श में भाग लेते हुए प्रोफेसर जी. अटवैक, निदेशक सेन्टर फॉर इन्टरनेशनल हाईयर एडुकेशन, वॉस्टन कॉलेज

ई. डी. यू. पत्रिका का वार्षिक कुलपति समागमः कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल ने वार्षिक कुलपति समागम में भाग लिया जो इ. डी. यू. पत्रिका एवं अशोका विश्वविद्यालय के द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया था। 31 अगस्त एवं 1 सितम्बर 2012 को हुए इस कार्यक्रम में उनका संबोधन भी हुआ था विषय था – "क्युरिकुलम एण्ड पेडागॉगी हाऊ केन वी. बी. फ्युचर रेडी?" कार्यक्रम के अन्य वक्तागण थे प्रोफेसर इन्दिरा पारिख अध्यक्ष फ्लेंम, पंकज जलोटे, निदेशक, आई. आई. टी. दिल्ली और धीरज संधी, डीन, शैक्षणिक मामले आई. आई टी. कानपुर।

एशियन बोर्डरलैण्ड्स सम्मलेनः डीन (शैक्षणिक योजना) ने तीसरे बोर्डरलैण्ड्स सम्मेलन में भाग लिया। जिसका विषय था' कनेक्शनस्, कॉरिडोर्स एण्ड कम्यूनीटिज। यह सम्मेलन 11–13 अक्टूबर 2012 को सिंगापुर में हुआ था। उन्होंने इस अवसर का उपयोग नालंदा श्री विजया केन्द्र की अद्यतन जानकारी हासिल करने के लिए भी किया। डीन वहा। श्री पीटर पेंग से भी मिली जो येल–एन. यू. एस. सहयोग के निदेशक हैं तथा अन्य विद्वानों को नालंदा विश्वविद्यालय की शैक्षणिक योजना से परिचित कराया।

ए. एन. कॉलेज पटना में पर्यावरण और इतिहास विषयक सम्मेलनः कुलपति एवं डीन (शैक्षणिक योजना) ने 30 नवम्बर 2012 को ए. एन. कॉलेज पटना में हुए पर्यावरण एवं इतिहास विषयक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में भाग लिया। सत्र की शुरूआती प्रतिष्ठित वक्ताओं की श्रेणी में कुलपति शामिल रही थी।

डॉ. गोपा सभरवाल, ई. डी. यू. के वार्षिक सम्मेलन के अन्य वक्ताओं के साथ

परिसर

ई. डी. सी. आई. एल. के द्वारा विश्वविद्यालय का विस्तृत परियोजना रिर्पोट पेश

इडसिल इंडिया लिमिटेड जिसे विश्वविद्यालय की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार करने का कार्यादेश दिया गया था ने मार्च 2012 में अपनी रिपोर्ट विश्वविद्यालय को सौंप दी। इस रिपोर्ट को प्रबंधन मंडल ने जुलाई 2012 की बैठक में स्वीकृति प्रदान कर दी।

रिपोर्ट के अनुसार विश्वविद्यालय की स्थापना पर अनुमानतः 2154.35 करोड़ रूपये का एवं 2014–15 से 2021–22 तक के आवर्त्ती व्यय पर 1378.26 करोड़ रूपये खर्च होंगे।

परियोजना रिपोर्ट इस विचार पर आधारित है कि परिसर का निर्माण वित्तीय वर्ष 2013–14 के आरम्भ से प्रारम्भ होगा और पहला शैक्षणिक सत्र वर्ष 2014 के ग्रीष्म ऋतु से शुरू होगा। विश्वविद्यालय अपने स्कूलों की पूरी क्षमता के साथ वर्ष 2021–22 से शुरू होगी।

इस रिपोर्ट की अन्य विशेषताएं इस प्रकार हैंः–

1. नालंदा विश्वविद्यालय अपने सभी सात विषयों में स्नातकोत्तर एवं डॉक्टोरल डिग्री प्रदान करेगी।
2. विश्वविद्यालय के प्रत्येक स्कूल में 150 स्नातकोत्तर एवं 50 डॉक्टोरल छात्रों का प्रावधान रखा गया है।
3. नालंदा विश्वविद्यालय अपने शैक्षणिक कार्यक्रम की शुरूआत वर्ष 2014–15 से करेगी और छात्रों की संख्या 2450 पर पहुंचकर स्थिर हो जायेगी जो प्रारंभिक विकास की अवस्था की समाप्ति अर्थात् 2021–22 तक पूरी होगी।
4. नालंदा विश्वविद्यालय पूर्ण आवासीय होगी जिसमें सभी छात्रों, अध्यापकों एवं गैर शिक्षण कर्मियों के लिए एक ही परिसर में आवास की सुविधा होगी।

5. यह प्रस्ताव किया गया है कि सेवाएं जैसे हाउस कीपिंग, सुरक्षा, बागवानी, परिवहन, कैन्टीन/कैफेटेरिया, भोजन व्यवस्था खेती–बाड़ी आदि कार्य बाहरी लोगों के हाथों में दी जायेगी।

6. शैक्षणिक एवं गैर–शैक्षणिक कर्मियों के वेतन मद के व्यय का निर्धारण भारत में केवल दूसरी अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय जैसे साऊथ एशिया विश्वविद्यालय (SAU) के आधार पर किया गया है। इसके अलावा यह प्रस्ताव किया गया है कि कुछ भत्ते सभी स्तर के शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक कर्मियों को दिये जायेंगे।

7. परिसर निर्माण संबंधी व्यय का आकलन केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा मानित दर प्लीन्थ एरिया रेट 2007 (PAR-2007) पर आधारित है। यह आकलन सुसंगत दर तालिका जो भारत में बजट आकलन निर्धारण की स्वीकार्य मानक है, के अनुरूप है। (अभी यह 49% है)

8. यह परिसर गृह–5 मानक के अनुरूप होंगे।

विश्वविद्यालय में नए पदनाम और पद–स्थान की सृष्टि

जिन पदाधिकारियों के पदनाम में परिवर्त्तन किया गया

- डॉ. अंजना शर्मा जिनकी नियुक्ति विशेष कार्य पदाधिकारी (शैक्षणिक मामले) के रूप में हुई थी को डीन (शैक्षणिक योजना) के रूप में पुर्ननामित किया गया। जिससे विश्वविद्यालय के लिए की जा रही उनके कार्यों और विभिन्न मंचों पर उन्हें अपने कार्यों को बेहतर तरीके से प्रतिबिंबित करने में सहुलियत हो सके।

- डॉ. पदमाकर मिश्रा जिनकी नियुक्ति विशेष कार्य पदाधिकारी (वित्त) के पद दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रतिनियोजन के आधार पर हुई थी, को विश्वविद्यालय के पहले वित्त पदाधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया।

कार्यालय कर्मियों का विस्तार

विश्वविद्यालय के द्वारा एक और असैनिक अभियंता की नियुक्ति की गई जो चहारदीवारी के निर्माण एवं अस्थायी परिसर कार्यालय में रखरखाब और अन्य संबंधित कार्यों की गुणवत्ता एवं प्रगति का पर्यवेक्षण कर सके। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के द्वारा राजगीर कार्यालय के लिए एक कार्यालय परिचारक एवं एक केयर टेकर की नियुक्ति की गई।

विज्ञापन के माध्यम से विश्वविद्यालय ने एक रिसेप्सनिस्ट और एक आशुलिपिक टंकक के लिए साक्षात्कार आयोजित किया था और दो कनीय सहायक सह टंकक और दो लेखा सहायक हेतु लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार क्रमशः दिसम्बर 2012 और जनवरी 2013 में आयोजित किया गया था। चुने हुए उम्मीदवारों ने विश्वविद्यालय के दिल्ली स्थित कार्यालय में संक्षिप्त समय में पदभार ग्रहण कर लिया।

दिल्ली कार्यालय का नए भवन में स्थानान्तरण

विश्वविद्यालय का कामकाज नई दिल्ली में प्रारम्भ से ही उस भवन में चल रहा था जिसे बिहार सरकार के द्वारा किराये पर दिया गया था। यह कार्यालय स्थान की दृष्टि से अपर्याप्त था, जिसमें विश्वविद्यालय के सभी विभागों का समायोजन नहीं हो पा रहा था। लिहाजा, नई दिल्ली स्थित कार्यालय के लिए विश्वविद्यालय को ऐसे स्थान की आवश्यकता महसूस हुई जहां विश्वविद्यालय के कार्यों को सुविधाजनक तरीके से अंजाम दिया जा सके। यह आवश्यकता समय के साथ और बढ़ती गयी। विश्वविद्यालय को अपने पदाधिकारियों के लिए, इन्टर्न के लिए, वास्तुकला प्रतियोगिता के संचालन के लिए, फैलो और फेकल्टी जिनकी नियुक्ति की जानी है उनके लिए और अंततः उन आगंतुकों के लिए जो किसी महत्वपूर्ण बैठक में भाग लेने के लिए आमंत्रित किये गये हैं के लिए अधिक स्थान की आवश्यकता थी।

अंततः विश्वविद्यालय नई दिल्ली के लोदी स्टेट में एक ऐसे स्थान को ढूंढ़ने में सफल रही जो स्थान के दृष्टिकोण से उपयुक्त और विश्वविद्यालय के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनुकूल पड़ता था। इस भवन को पट्टे पर लेने के संबंध में प्रस्ताव एक उप समिति जिसमें श्री एन. के. सिंह, सचिव (पूर्व) और कुलपति शामिल थी के बीच वितरित किया गया और इस पर कुलाधिपति से भी मंतव्य मांगा गया। सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने के बाद विश्वविद्यालय ने आवश्यक प्रक्रियाएं पूरी की और नवम्बर 2012 में नए भवन में प्रवेश किया।

बिहार सरकार के द्वारा अंतरिम परिसर हेतु स्थान का प्रबन्ध

विश्वविद्यालय को बिहार सरकार के द्वारा अक्टूबर 2012 में एक पत्र प्राप्त हुआ था जिसके अनुसार राजगीर स्थित क्षेत्र प्रदर्शन केन्द्र (स्वास्थ्य विभाग) की सम्पूर्ण 4.5 एकड़ (मुख्य भवन के 4 कमरे और पीछे की 4 फ्लैटस को छोड़कर) को विश्वविद्यालय को उपलब्ध कराने की सूचना दी गयी थी। इसक बाद यह स्थान विश्वविद्यालय को अपने अंतरिम परिसर की स्थापना के लिए उपलब्ध हो गयी थी। विश्वविद्यालय का अस्थायी कार्यालय भी इसी परिसर के एक भाग में अवस्थित है।

अंतरिम परिसर का मरम्मति से पहले का एक भवन

इसके बाद विश्वविद्यालय ने सम्पूर्ण परिसर का खाका आर्किटेक्ट से बनवाया। जिसके बाद यह स्पष्ट हो गया कि विश्वविद्यालय इस परिसर में 11 घरों का उपयोग कर सकेगा। इसके अलावा इसके 20 कमरों का कार्यालय, पुस्तकालय, क्लासरूम और कार्यालय कक्ष में तब्दील किया जा सकेगा।

निःसंदेह उपलब्ध कराये गये भवन और इसकी सुविधाओं को व्यापक पैमाने पर सुधारने और संवारने की आवश्यकता होगी। इसके अलावा बुनियादी सुविधाओं जैसे पानी की सप्लाई, जल निकासी की व्यवस्था आदि कार्य करने होंगे जिससे यह विश्वविद्यालय के द्वारा उपयोग में लाया जा सके।

अंतरिम परिसर का मरम्मति से पहले का एक भवन

अंतरिम परिसर का मरम्मति से पहले का एक भवन

विश्वविद्यालय ने एक वास्तुकार मेसर्स कपूर एशोसिएट्स पटना को बहाल किया जिन्हें 4.5 एकड़ अस्थायी परिसर में जीर्णोद्धार के विषय में वास्तुकलात्मक सेवाएं देनी थी। विश्वविद्यालय से विस्तृत विचार–विमर्श करने के उपरान्त इस कंपनी ने विभिन्न मकानों की मरम्मत/नवीकरण का खाका तैयार किया। एक विस्तृत परिमाण का बिल (BOQ) उनके द्वारा तैयार किया गया। जिसके लिए विश्वविद्यालय तकनीकी मंजूरी लेने की कोशिश कर रही है। आकलित व्यय BOQ के अनुसार 2.52 करोड़ होता है।

स्थायी परिसर की संरचना और निर्माण कार्यों में अग्रतर प्रगति

विदेश राज्यमंत्री के द्वारा संसद में अगस्त 2010 को नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम को प्रस्तुत करते हुए कहा गया था कि नालंदा विश्वविद्यालय की वास्तु संरचना का निर्धारण डिजायन प्रतियोगिता के माध्यम से होगा। वास्तव में संसद में 2010 में दिये गये उस वचन को ही विश्वविद्यालय ने अधिदेश के रूप में प्राप्त किया।

डिजायन प्रतियोगिता की कार्य योजना

विश्वविद्यालय ने यह जानने में प्रर्याप्त ध्यान दिया कि वास्तव में भारत में हुई ऐसी प्रतियोगिता के तौर–तरीके और प्रक्रियाएं क्या रही है और उन व्यक्तियों से भी संपर्क स्थापित किया गया जो इन प्रतियोगिताओं से परिचित थे।

विश्वविद्यालय ने निर्णय लिया कि वह कांउसिल ऑफ आर्किटेक्चर (सी. ओ. ए.) जो भारत सरकार के वास्तु अधिनियम 1972 के तहत एक स्वायत्त सांविधिक संस्था है और भारत में वास्तु कला अध्यव्यवसाय का नियामक भी है, के दिशा निर्देशों का अनुसरण करेगी।

डिजायन प्रतियोगिता के संचालन में सुझाव देने हेतु संचालन समिति का गठन

विश्वविद्यालय के द्वारा 17 फरवरी 2012 को एक संचालन समिति का गठन किया गया जिसे वास्तु संरचना प्रतियोगिता के संचालन के लिए अपना सुझाव देना था। समिति का स्वरूप इस प्रकार थाः –

1. **श्री जे. आर. भल्ला (सभापति),** भूतपूर्व अध्यक्ष, वास्तु कला परिषद्।
2. **श्री रंजीत साविरवी,** वास्तुकार, आई. जी. एन. सी. ए. प्रतियोगिता 1986 – भारत में पहले अन्तर्राष्ट्रीय वास्तुकला प्रतियोगिता के पेशेवर सलाहकार।
3. **श्री बी. एस. दुग्गल,** भूतपूर्व महानिदेशक, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग।
4. **श्री बी. बोस,** तकनीकी परियोजना प्रबंधक, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय एवं भूतपूर्व अतिरिक्त महानिदेशक केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग।
5. **डॉ. गोपा सभरवाल,** कुलपति नालंदा विश्वविद्यालय।

डिजायन प्रतियोगिता के संचालनार्थ पेशेवर सलाहकार की नियुक्ति

वास्तु कला परिषद् (सी. ओ. ए.) के दिशा निर्देशों के अनुरूप एवं संचालन समिति के परामर्शानुसार यह तय हुआ कि इस प्रतियोगिता हेतु एक पेशेवर सलाहकार की नियुक्ति की जाय जो वास्तु कला प्रतियोगिता हेतु एक विषय सार प्रस्तुत कर सके। 14 मार्च 2012 को पेशेवर सलाहकार की नियुक्ति हेतु समाचारपत्रों के माध्यम से आवेदन आमंत्रित किये गए। 12 अप्रैल 2012 को समिति ने प्राप्त कुल 10 आवेदनों में से 3 को अंतिम तौर पर चुना।

30 अप्रैल 2012 को तीनों चुने हुए अभ्यर्थियों का साक्षात्कार हुआ जिसमें वास्तुविद ए. आर. रामानाथन को समिति ने सर्वसम्मति से पेशेवर सलाहकार चुना।

इसके बाद 22 जून एवं 17 जुलाई 2012 के अपनी बैठकों में समिति ने श्री रामानाथन से उनकी फीस एवं अन्य जिम्मेवारियों के विषय में बातचीत की और उनसे अनुबंध करने की अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। इस तरह 17 जुलाई 2012 को श्री रामानाथन पेशेवर सलाहकार के रूप में नियुक्त कर लिये गए।

पेशेवर सलाहकार की नियुक्ति के उपरांत प्रतियोगिता प्रक्रिया और इस प्रतियोगिता में भाग लेने की पात्रता की रूप रेखा पर विस्तार से विचार–विमर्श हुआ।

इसी दौरान पेशेवर सलाहकार ने राजगीर में विश्वविद्यालय निर्माण स्थल का मुआयना किया एवं इस संबंध में विश्वविद्यालय की आवश्यकताओं को समझने की चेष्टा की।

पेशेवर सलाहकार से परामर्श कर संचालन समिति ने निर्णय लिया कि इस एक चरणीय प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु प्रथमतः देश/विदेश के सभी वास्तुकारों एवं वास्तु संस्थाओं को बुलाया जाय और उसमें से कुछ को चुन लिया जाय। तदन्तर इन पूर्व अर्हता प्राप्त वास्तुकारों/वास्तु संस्थानों को प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु आमंत्रित किया जाय।

कांउसिल ऑफ आर्किटेक्चर के नियम के अनुसार वे वास्तुकार/वास्तु संस्थान ही ऐसे प्रतियोगिता में भाग लेने के योग्य माने जाते हैं, जो उनके यहां निबंधित है।

इसके अलावा विदेशी वास्तुकारो/वास्तु संस्थानों द्वारा प्रतियोगिता में भाग लेने की शर्त्त है कि वे एक भारतीय वास्तुकार/वास्तु संस्थानों के साथ संयुक्त उपक्रम के रूप में अपनी दावेदारी पेश करें।

17 एवं 25 सितम्बर और 12 अक्टूबर की बैठकों में संचालन समिति के द्वारा सघन विचार–विमर्श के आधार पर अभिरूचि की अभिव्यक्ति एवं पूर्व अहर्त्ता दस्तावेजों को अन्तिम रूप दिया गया।

इस दस्तावेज में विश्वविद्यालय की संक्षिप्त भूमिका, अभिरूचि की अभिव्यक्ति के प्रावधान, भागीदारी हेतु आवश्यक न्यूनतम योग्यता अर्हता पूर्व की शर्त्ते एवं मूल्यांकन के प्रारूप को शामिल किया गया था।

संचालन समिति के द्वारा विश्वविद्यालय के लिए नेट जीरो पद्धति की संस्तुति

विश्वविद्यालय अपने परिसर को 'गृह-5[4] के मानको के अनुरूप बनाना चाहती थी। इसी विचार–विमर्श के दौरान विश्वविद्यालय का परिचय अमेरिका आधारित प्रतिष्ठान नेक्सेन्ट से हुआ जो यू. एस. एड परियोजना के माध्यम से भारत सरकार के साथ नई परियोजना के विकास में पूर्ण शून्य/निकटतम शून्य के दृष्टिकोण के अर्न्तगत कार्य कर रही है। संचालन समिति ने इस प्रस्ताव को न केवल भरपूर सर्मथन दिया बल्कि उसने यह अनुशंसा भी की कि इस प्रावधान को अभिरूचि की अभिव्यक्ति दस्तावेज में शामिल किया जाय तथा इसके आधार पर ही प्रतिभागियों के दावों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

नालंदा विश्वविद्यालय ऊर्जा मंत्रालय के पथ प्रदर्शी परियोजना नेट जीरो ऊर्जा भवन में शामिल

इसके बाद 2 जनवरी 2013 को विश्वविद्यालय ऊर्जा मंत्रालय के अधीन ऊर्जा दक्षता ब्यूरो (बी. ई. ई.) के साथ पूर्ण शून्य ऊर्जा भवन (N.Z.F.B.) पथ प्रदर्शी परियोजना जो यू. एस. एड. के सहयोग से एडवांस क्लीन एनर्जी डिप्लाइमेन्ट (P.A.C.E.-D.) परियोजना के अर्न्तगत संचालित है के साझेदारी पत्र पर हस्ताक्षर किया।

इस तकनीकी सहायता परियोजना के तहत यू. एस. एड. (P.A.C.E.-D.) ऊर्जा दक्षता ब्यूरो के साथ विश्वविद्यालय को वह तकनीकी सहायता उपलब्ध करायेगी जिससे परिसर नेट जीरो इनर्जी की स्थिति को प्राप्त कर सके।

4 (GRIHA) जी. आर. आई. एच. ए. एक परिवर्णी है जिसका तात्पर्य ग्रीन रेटिंग फॉर इन्टीग्रेटेड हैबीटैट एसेसमेन्ट से है। यह भारत की राष्ट्रीय रेटिग प्रणाली है। गृह की खोज टी. ई. आर. आई (TERI) ने की थी और इसे भारत सरकार के नव एवं नवीकरण उर्जा मंत्रालय के द्वारा संयुक्त रूप से विकसित किया गया है। यह एक हरित भवन डिजायन मूल्यांकन पद्धति है और देश के विभिन्न जलवायु क्षेत्रों के सभी प्रकार के भवनों के लिए अनुकूल है।

अपने परिसर में पूर्ण शून्य उर्जा भवन के मानकों को सफल कार्यान्वयन के उपरान्त नालंदा विश्वविद्यालय इसके डिजायन और निर्माण को बढ़ावा देने हेतु कार्य करेगी ताकि देश में ऐसे और भवनों का निर्माण हो सके।

डिजायन प्रतियोगिता को आंकने के लिए निर्धारित मानक

परियोजना के महत्व नालंदा की समृद्ध विरासत और वास्तुकला मास्टर प्लान के दायित्वों को ध्यान में रखते हुए निम्नांकित मानकों पर आवेदकों को परखने का निर्णय लिया गया।

1. कार्य अनुभव – परिसर योजना
2. स्थापत्य अभिव्यक्ति– 25000 वर्ग किलोमीटर या उससे अधिक
3. कार्यवधि के दौरान जीती हुई प्रतियोगिता
4. गत तीन वर्षों का औसत व्यापार
5. नेट जीरो या हरित भवन का अनुभव

वास्तुकला संरचना प्रतियोगिता का शुभारंभ 21 नवम्बर 2011 को हुआ और उम्मीदवारों से 8 जनवरी 2013 तक अपने आवेदन भेजने को कहा गया।

प्रतियोगिता के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए विदेशों में भारतीय दूतावासों और राजनयिक मिशनों से विदेश मंत्रालय के द्वारा इस सूचना को प्रसारित करने का अनुरोध किया गया। इसके साथ अभिरूचि की अभिव्यक्ति की मुद्रित कॉपी भी उपलब्ध करायी गयी।

डिजायन प्रतियोगिता को जर्बदरस्त रिस्पान्स मिला 79 आवेदन आये

विश्वविद्यालय ने अभिरूचि की अभिव्यक्ति से संबंधित आशंकाओं को स्वीकार करने की अंतिम तिथि 27 दिसम्बर 2012 निर्धारित की थी। संभावित धारकों द्वारा 33 स्पष्टीकरण संबंधित उठाये गये जिन्हें विश्वविद्यालय ने छह भागों में अपने वेबसाइट पर सभी संभावित धारकों के लाभ के लिए जबाव प्रस्तुत किया।

इसी समयावधि में विश्वविद्यालय के वेबसाइट पर डाउनलोड करने के लिए रखे दस्तावेज को 3500 से अधिक लोगों ने देखा। देश के कुछ प्रतिष्ठित वास्तुकारों/वास्तु संस्थाओं समेत कुल 79 संस्थानों से आवेदन की प्राप्ति हुई थी।

इन 79 प्राप्त आवेदनों में 35 आवेदन वैयक्तिक वास्तुकारों/वास्तु संस्थानों की ओर से आये थे जबकि 44 संयुक्त उपक्रम के तहत आये थे। इस तरह कुल 102 भारतीय एवं विदेशी वास्तुकारों/वास्तु संस्थानों के द्वारा वैयक्तिक

अथवा संयुक्त उपक्रम के तहत आवेदन किये गये थे। सभी 79 आवेदकों में से 33 आवेदक को अन्तिम रूप से मूल्यांकन हेतु योग्य माना गया।

प्रतिभागियों की छटाई के लिए चयन समिति का गठन

इन आवेदनों की छटाई और पूर्व योग्यता को परखने के लिए विश्वविद्यालय के द्वारा एक चयन समिति का गठन किया गया जो इस प्रकार है –

1. प्रोफेसर कुलभूषण जैन – निदेशक वास्तुकला संकाय, पर्यावरणीय योजना एंव प्रौदयोगिकी केन्द्र (CEPT) अहमदाबाद
2. प्रोफेसर के. जैसिम – प्रमुख, जैसिम प्रतिष्ठान
3. श्री आर. के. काकर – सेवानिवृत अतिरिक्त महानिदेशक केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग
4. डॉ. गोपा सभरवाल – कुलपति, सभापति

आवेदनों की संवीक्षा करती चयन समिति

समिति की बैठक 15–17 फरवरी 2013 को हुई जिसमें दावों का मूल्यांकन किया गया। अभिरूचि की अभिव्यक्ति दस्तावेज में वर्णित श्रेणियों के आधार पर अंक प्रदान करते हुए विश्वविद्यालय के द्वारा एक कट ऑफ निर्धारित किया गया।

निम्नांकित 8 आवेदक प्रतियोगिता में प्रतिभागी बनने के योग्य घोषित किये गए।

1. सी. पी. कुकरेजा एशोसिएट्स, नई दिल्ली।
2. हंड्रेड हेन्डस, बंगलौर और एलाइज एण्ड मौरीसन यू. के.
3. ओपोलिस आर्किटेक्टस, मुम्बई और मकी एण्ड एशोसिएटस जापान
4. राज रेवाल एशोसिएट्स नई दिल्ली और दुलाल मुखर्जी कोलकता और अरूण रेवाल, नई दिल्ली
5. सिक्का एशोसिएट्स आर्किटेक्टस, नई दिल्ली और अटकिनस (चीन) लिमिटेड
6. स्पेस मैटर्स, नई दिल्ली और स्पेश डिजायन, नई दिल्ली और स्नोहेटटा, नार्वे
7. वास्तु शिल्प कन्सल्टेन्डस अहमदाबाद
8. विरेन्दर खन्ना एण्ड एशोशिएटस नई दिल्ली और आइडॉम स्पेन

पूर्व अर्हता इन प्राप्त आठ आवेदकों में से दो आवेदक वैयक्तिक प्रकार के वास्तुकार/वास्तु संस्थान थे। शेष छह संयुक्त उपक्रम के तहत। जिनमें पांच विदेशी साझेदार के साथ थे।

इसके और बाद मुख्य प्रतियोगिता हेतु एक वृहत् दस्तावेज बनाया गया जिसमें अन्य बातों के अलावा प्रतियोगिता के कायदे–कानून और दिशा–निर्देश डिजायन निर्देश, स्थापत्यक कार्यक्रम और स्थानिक आवश्यकता, धारणीय गतिविधि और प्रतिभागी वास्तुकारों की सूचना प्राप्त करने के निर्देश थे। ये दस्तावेज सभी आठ पूर्व अर्हता प्राप्त वास्तुकारों को 21 फरवरी 2013 को भेजे गए।

पूर्व अर्हता प्राप्त प्रतिभागियों से अपेक्षा थी कि वे 25 अप्रैल 2013 तक अपने डिजायन और परिसर की रूपरेखा से बनी प्रतिकृति के साथ उस एक भवन की प्रतिकृति भी पेश करे जिसे प्रथम चरण के निर्माण में शामिल होना था।

निर्माण स्थल की जांच के लिए कई प्रकार की साइट सर्वे

प्रतियोगिता की तैयारी करने के साथ ही विश्वविद्यालय ने कुछ आवश्यक सर्वे का कार्यभार खुली निविदा के तहत दिया। इसी बीच केन्द्रीय भूतल जल बोर्ड के द्वारा निर्माण स्थल के भूतल जल के सर्वे का कार्य किया गया।

स्थलाकृति सर्वेः स्थलाकृति सर्वे की निविदा 23 जुलाई 2012 को समाचार पत्र में विज्ञापन के माध्यम से एवं विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर दी गयी थी। कुल 11 प्रस्ताव आये थे जिसका मूल्यांकन करते हुए समिति ने मोनार्क सर्वेयर एण्ड इंजीनियरिंग कन्सल्टेन्ट्स प्राइवेट लिमिटेड पुणे को कार्य की जिम्मेवारी दी।

मृदा जांचः इसी तरह मृदा जांच हेतु 31 जुलाई 2012 को सूचना माध्यमों और विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर निविदा दी गयी। इस कार्य के लिए सात प्रस्ताव आये थे और समिति के द्वारा मूल्यांकन करने के उपरान्त मेसर्स एलाइड इंजीनियर्स नई दिल्ली को कार्यभार सौंपा गया।

भूतल जल सर्वेः परिसर में भूतल जल की स्थिति को लेकर जो सर्वे केन्द्रीय भूतल जल पटना के द्वारा किये गये थे, उसकी रिर्पोट केन्द्रीय भूतल जल बोर्ड ने फरवरी 2013 को कुलाधिपति प्रोफेसर अमर्त्य सेन को सौंप दी।

नालंदा विश्वविद्यालय निर्माण स्थल पर मिट्टी जांच के लिए नमूने का संग्रहण

जी. पी. आर. एस. के माध्यम से पुरातात्विक अवशेषों की खोजः विश्वविद्यालय का निर्माण स्थल जिस क्षेत्र के अर्न्तगत है वह क्षेत्र पुरातात्विक अवशेषों के मामले में समृद्ध है। अतः निर्माण कार्य करने या उसकी योजना बनाने से पहले यह जानना आवश्यक था क्या कोई अवशेष इस भूमि पर या उसके नीचे अभी भी मौजूद है?

निर्माण कार्य तथा नियोजन से पूर्व विश्वविद्यालय भारतीय पुरातात्विक सर्वे के साथ इन मुद्दो पर उसके संभावित सहयोग को लेकर बातचीत की थी। तदोपरांत ए. एस. आई. ने इसके लिए कुछ पुरातत्ववेत्ताओं को निर्माण स्थल के मुआयने के लिए भेजा था। यह कार्य जून 2012 को पूरा हुआ। जिसके पश्चात् यह निष्कर्ष आया कि विश्वविद्यालय के निर्माण क्षेत्र में किसी ठोस पुरातात्विक अवशेष होने की संभावना नहीं है।

तथापि, संपूर्ण सुनिश्चिता के लिए यह तय हुआ कि यह कार्य जी. पी. आर. एस. से पूरा कराया जाय। इसके लिए जनवरी 2014 को अखवार के माध्यम से निविदा आमंत्रित की गयी और मूल्यांकन के उपरान्त यह जिम्मेवारी मेसर्स तोजो विकास इन्टरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड को सौंपी गयी। कंपनी ने अपनी रिपोर्ट मार्च 2013 में जमा कर दी जिसमें कहा गया है कि निर्माण स्थल पर किसी भी प्रकार के पुरातात्विक अवशेष/संसाधन नहीं है। तथापि, रिर्पोट में दो टीलों के प्रति ध्यान आकृष्ट कराते हुए कहा गया कि विश्वविद्यालय के निर्माण के समय इस पर विशेष ध्यान रखा जाय।

चहारदीवारी का निर्माण का कार्य

चहारदीवारी निर्माण का कार्य दिसम्बर 2011 में प्रारंभ हुआ था जो मार्च 2013 तक लगभग पूरा हो गया। हालांकि कुछ फांके छोड़ दिये गये ताकि आस पड़ोस के गांव को विश्वविद्यालय की जमीन होकर मुख्य सड़क का रास्ता मिल सके। जब ग्रामीणों को वैकल्पिक रास्ते उपलब्ध कराये जायेंगे तब इन फांको को बंद कर दिया जाएगा।

455 एकड़ में फैले परिसर की चहारदिवारी का निर्माण करते मजदूर

वित्त

वित्तीय वर्ष 2010–11 का गैर–अंकेक्षित वार्षिक लेखा जोखा प्रबंधन मंडल के द्वारा अक्टूबर 2011 में बीजिंग में हुई बैठक में पारित किया गया। जिस भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक के द्वारा अंकेक्षण किया गया। वार्षिक खाता–वही को लेखा परीक्षण रिपोर्ट के साथ प्रबंधन मंडल के समक्ष जुलाई 2012 में हुए चौथी बैठक के दौरान प्रस्तुत किया गया और तदन्तर इस पर स्वीकृति मिली।

वित्तीय वर्ष 2011–12 का गैर–अंकेक्षित वार्षिक लेखा–जोखा को प्रबंधन मंडल के द्वारा जुलाई 2012 में हुई इसकी चौथी बैठक में स्वीकृत किया गया। प्रबंधन मंडल को आश्वस्त किया गया कि वित्त समिति के गठन के उपरान्त वार्षिक लेखा को उसके सामने स्वीकृति हेतु प्रस्तुत करने से पहले उस पर वित्त समिति विचार करेगी। इस वित्तीय वर्ष का अंकेक्षित लेखा–जोखा प्रबंधन मंडल की फरवरी 2013 में हुई बैठक में प्रस्वीकृत हुआ।

इस तरह विश्वविद्यालय के जनवरी 2012 तक के खातों के लेन–देन का अंकेक्षण पूरा हुआ।

विश्वविद्यालय की महत्वपूर्ण गतिविधियां जो अभिशासन, शैक्षणिक मामले परिसर एवं वित्त से संबंधित है, निम्नलिखित पदाधिकारियों के देखरेख में होता है।

अभिशासन

कुलपति डॉ. गोपा सभरवाल
(gsabharwal@nalandauniv.com)

परामर्शी :

श्री सुधीर कुमार
(skumar@nalandauniv.com)

प्रशासनिक पदाधिकारीः

श्री एस. एल. शर्मा
(slsharma@nalandauniv.com)

शैक्षणिक मामले डीन, शैक्षणिक योजना :

डॉ. अंजना शर्मा
(asharma@nalandauniv.com)

वित्त

वित्त पदाधिकारी :

डॉ. पदमाकर मिश्रा
(pmishra@nalandauniv.com)

परिसर

पेशेवर सलाहकार आर्किटेक्चर एण्ड डिजायन :

श्री ए. आर. रामानाथन
(ar.ramanthan@gmail.com)

नई दिल्ली कार्यालय

द्वितीय तल, काउंसिल फॉर सोशल डेवेलोपमेंट
संघरचना, 53, लोदी स्टेट, नई दिल्ली – 110 003
दूरभाष संख्या : +91–11 24618352, +91–11 26172328
फैक्स संख्या : +91–11 24618351

राजगीर कार्यालय

राजगीर, जिला नालंदा, पिन – 803 115
बिहार, भारत
www.nalandauniv.edu.in